AGRADIANCE

"To Reach the Good News to the Poor"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWSLETTER

OCTOBER 2014

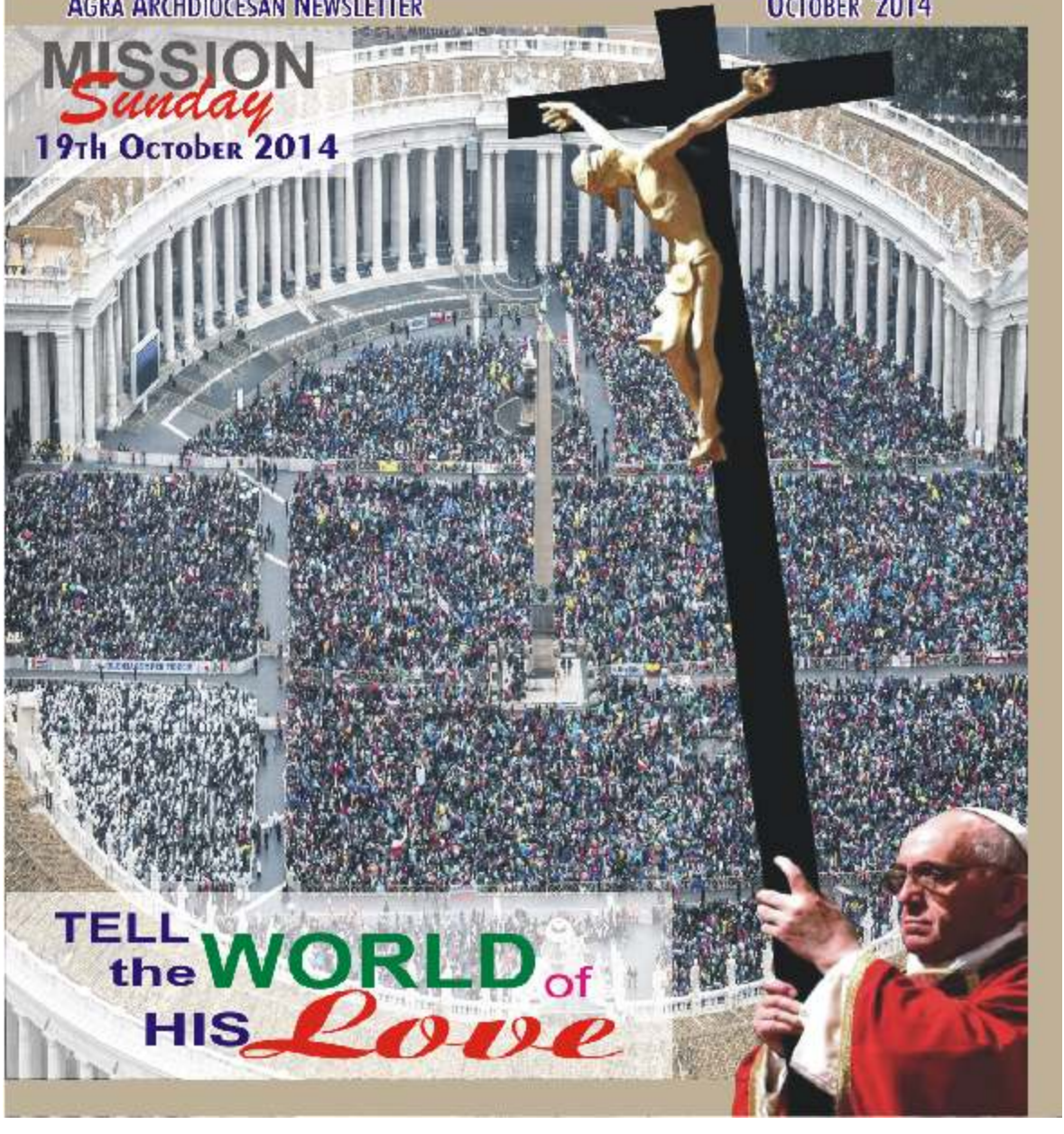

Newly Elected Working Committee Members
of Archdiocesan Pastoral Council

Birthday Celebrations
Of Fr. Thomas Paramundayil

Onam Celebrations at Noida

Archbishop with ACDSSS Team, Bastar

Aligarh Youth with Missionaries of Charity inmates

Agra Deanery Bible Festival

Aligarh Deanery Bible Festival

Hindi Divas, Greater Noida

Editorial

"No man can live as an island journey, through life alone." माता मरियम के सम्मान में हम अक्सर यह गीत गाते हैं। कोई भी प्राणी इस दुनिया में अकेला नहीं रह सकता। हम सबका कोई न कोई समाज, कुनबा, परिवार और घर होता है। कोई भी रॉबिनसन क्रूसो के समान पूरी जिन्दगी समुद्र तट पर अकेले नहीं बिता सकता। हमें जीने के लिए परिवार चाहिए। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका अस्तित्व समाज में संभव और अर्थपूर्ण है। समाज परिवारों से मिलकर बनता है और परिवार, घर में रहने वाले सदस्यों से मिलजुलकर बनता है। परिवार, समाज की सबसे छोटी किन्तु सबसे महत्वपूर्ण और मजबूत इकाई है। उसी तरह हरेक ख्रीस्तीय परिवार कलीसिया की सबसे छोटी इकाई है।

कलीसिया का आधार मसीही परिवार है। परिवार वह संस्था है, जहाँ सदस्य का हर समय स्वागत है, जहाँ वह अपनापन महसूस करता है। शाम को देर से लौटने पर भी उसे लगता है, कि कोई उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। कोई है जो उसे बहुत प्यार करता है। आज समाज में परिवार की भूमिका और उसका अपना महत्व तेजी से घटता जा रहा है। संयुक्त परिवार ताश के पत्तों की तरह बिखरते जा रहे हैं। पारिवारिक मूल्यों और आदर्शों का पतन होता जा रहा है। परिवार के सामने दिन प्रतिदिन कई नई और गंभीर चुनौतियाँ खड़ी होती जा रही हैं। न केवल पाश्चात्य समाज में, किन्तु अपने ही आदर्श भारतीय समाज में परिवार की महत्ता कम होती जा रही है।

ऐसे में कलीसिया कैसे शांत रह सकती है? परिवार के बिगड़ते और घटते स्वरूप की दशा से चिंतित कलीसिया अगले वर्ष अक्टूबर 2015 में सभी धर्माचार्यों की एक विशाल धर्मसभा का आयोजन कर रही है, जहाँ परिवार के सम्मुख सभी चुनौतियों पर मनन और मंथन किया जायेगा। उससे ठीक एक वर्ष पूर्व तैयारी स्वरूप अपने यहाँ भी धर्माचार्यों की एक विशेष धर्मसभा अगले महीने होने वाली है। कृपया उसकी सफलता के लिए प्रार्थना करें। इस अंक में परिवार के लिए **पवित्र परिवार से प्रार्थना** प्रकाशित की जा रही है। कृपया प्रतिदिन अपने परिवार में उसे करने की आदत डालें।

अक्टूबर महीना '**रोज़री का महीना**' मतलब रोज़री बोलने का महीना है। रोज़री की भक्ति और शक्ति से हम सब भली भांति परिचित हैं। रोज़री के द्वारा बड़े-बड़े युद्ध जीते गए हैं। रोज़री भक्ति जिन्दगी के साथ भी और जिन्दगी के बाद भी, क्योंकि जब इस दुनिया में कूच करेंगे, तो यही रोज़री हमारे गले में या अंगुलियों में सुशोभित रहेगी।

मिशन सण्डे (19 अक्टूबर) पर दिल खोलकर अपनी उदारता का परिचय दें। आपके द्वारा दिया गया दान दूरदराज और बियाबान क्षेत्रों में तैनात मिशनरियों व जरूरतमंदों लोगों की मदद करता है। इसमें बढ़चढ़कर भाग लें।

अक्टूबर महीने में हमारे धर्मप्रांत के सभी पुरोहित दो पालियों में वार्षिक आध्यात्मिक साधना (रिटरिट) में भाग लेंगे। कृपया अपने पुरोहितों की सादगी और पवित्रीकरण के लिए विशेष प्रार्थना करें।

संपादकीय लिखे जाने के दिन (30 सितम्बर) को हमारी प्यारी सिस्टर **ऐनिड** (आरजेएम) अपना 91वाँ जन्मदिन मना रही हैं। संभवत् वह धर्मप्रांत की सबसे बुजुर्ग मिशनरी हैं। ईश्वर इन्हें दीर्घायु प्रदान करे। उन्हें जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

30 सितम्बर को हमारे प्रिय **फादर जॉनसन सी.** की चौथी पुण्यतिथि भी है। ईश्वर उस महान आत्मा को अनन्त शांति प्रदान करे।

हमारे सभी मित्रों और शुभचिन्तकों को **दशहरा, ईद** और **दीपावली** पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं। आपके पत्रों, सुझावों का हमेशा स्वागत है।

प्रभु में आपका,

फादर मून लाज़रस

(कृते- अग्रेडियंस सम्पादकीय मण्डल)

Holy Father's Intentions for October 2014

General: That the Lord may grant peace to those parts of the world, most battered by war and violence.

Missionary: That World Mission Day may rekindle in every believer zeal for carrying the Gospel into all the world.

Shepherd's Voice

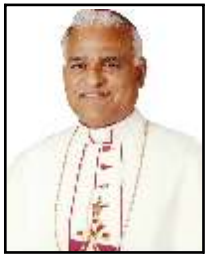

**"The Most Simple, Common and Easy to Follow Prayer-
The Prayer of the Rosary"**

The Extra-Ordinary Synod of Bishops on the theme "Pastoral Challenges to the Family in the context of Evangelization" is a way forward in the direction of Church renewal. In the year 1980 there was a Synod on "Nature and Vocation of the Family" that steered forward affirmation on sanctity of marriage and vitality of family at the heart of human society. Fifty years of the Second Vatican Council and twenty-five years of the Synod on the Family is marked by the proposed Ordinary Synod in October 2015 on the theme "Jesus Christ Reveals the Mystery and Vocation of the Family".

The Synod is expected to address the complex threats the institution of family faces. However, family is vital to the survival and flourishing of human community, society and the Church.

While the Extra-ordinary Synod is in progress from October 5-19, 2014, we are called upon to pray for the success of the Synod and for families. We are exhorted to pray to the "Holy Family" to preserve our families in holiness of life.

October 19th is the World Mission Sunday. The Mission Sunday message of the Holy Father reminds us that all baptized Christians are missionaries and the Church by nature is missionary. The disciples whom Jesus sent to proclaim the Gospel returned with joy. Christian joy is the joy of the mission, the mission of making Jesus known among all around us by our life and example, inspired by His Good News of Salvation. May our Archdiocese be intensely engaged in missionary tasks of reaching out to others with the power of the Gospel. May the joy of the Gospel fill our hearts. Our contributions however small, will strengthen the missionary movement of the entire Church. God loves the cheerful giver!

October month is the month of festivals in our society. Dushera, Diwali are the common festivals in which all take part. May the vibration of joy of life resonate while we exchange greetings with our friends and neighbours on the occasion of these feasts.

The richness of Christian life is experienced in and through meaningful renewal in our interior life. The priests in the Archdiocese shall be engaged in spiritual retreat in two groups from October 5-10 and from October 20-24, 2014 at the Cathedral.

May this exercise become the source of revitalizing of our enthusiasm for Church and for her mission. The support of all in prayer is an assurance to priests to be vigilant in ministry. We join together to pray for the sanctification of priests so that their sacred ministry may bear fruit.

Prayer for the missions in the Church and families has been the practice in Christian life. The most simple, the common and easy to follow prayer is the prayer of the Holy Rosary. This repetitive, traditional prayer though Marian in character, yet centred on Christ's mystery of love as though the five decades of the Rosary we reflect on the beauty of the face of Christ, who is the face of God, the face of every human person struggling through life, advancing to eternity. The month of October is dedicated to the Prayer of the Rosary. October 7th is the feast of Our Lady of the Rosary. The rosary beads that we slip through our fingers reciting "Hail Mary" and "Holy Mary" with devotion in the heart, the mind, may however, wander in vain, seem to have divine "tug" that is channelized through the Immaculate Heart of Mary, the Mother of all graces.

The personal testimony of St. John Paul II, will nurture in us a sentiment of devotion to the exercise of recitation of the Rosary personally or in common as a group: "How many graces I have received in these years from the Blessed Virgin through the Rosary? The Rosary has accompanied me in moments of joy and in moments of difficulty. To it I have entrusted any number of concerns; in it I have always found comfort".

The devastating floods in Kashmir Valley and in North East States of our country invite our emergency support. In solidarity with those who suffer, we join together as a Church and reach out in assistance. The substantial amounts pooled together have been channelized through CARITAS INDIA to the needy places.

May God be our Protector, Guardian and Saviour.

May God bless you.

✠ **Albert D'Souza** (Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (हिन्दी अनुवाद)

सबसे साधारण, आम और आसान प्रार्थना: माला विनती की प्रार्थना

निकट भविष्य में होने वाली धर्माध्यक्षों की विशेष धर्मसभा का विषय ''**सुसमाचार प्रचार की दृष्टि से परिवार के सामने धार्मिक चुनौतियाँ**'' निश्चय ही कलीसिया के नवीनीकरण की राह में सहायक सिद्ध होगा। वर्ष 1980 में सम्पन्न हुई धर्मसभा का विषय था, '**परिवार का स्वरूप और बुलाहट**'। इस धर्मसभा ने विवाह की पवित्रता और समाज में परिवार के स्थायित्व को दृढ़ता से आगे बढ़ाया। द्वितीय वाटिकन धर्मसभा के पचास वर्ष तथा 'परिवार' विषय पर आयोजित की गई धर्मसभा के पच्चीस वर्ष बाद अगले वर्ष अक्टूबर महीने में होने वाली सभी धर्माध्यक्षों की आम सभा का विषय है, ''**येसु**

ख्रीस्त परिवार का रहस्य और बुलाहट (हम पर) प्रकट करते हैं।''

इस सभा में उन सभी विषयों पर विचार विमर्श किया जायेगा, जो आज समाज में परिवार के सामने चुनौती बन गए हैं, हालाँकि परिवार फिर भी स्थायी है और समुदाय, समाज एवम् कलीसिया के रूप में फलता-फूलता जा रहा है। 5-19 अक्टूबर 2014 में होने वाली धर्माचार्यों की विशेष धर्मसभा की सफलता और सभी परिवारों के लिए हम प्रार्थना करें। हमारा आह्वान किया गया है कि, हम ''पवित्र परिवार'' से प्रार्थना करें कि हमारे परिवार पवित्रता का जीवन जीना जारी रखें।

19 अक्टूबर **विश्व मिशन दिवस** है। इस वर्ष संत पिता फ्रांसिस ने अपने मिशन दिवस के लिए दिए गए संदेश में याद दिलाया है, कि सभी बपतिस्मा प्राप्त ईसाई मिशनरी हैं और कलीसिया तो अपने स्वभाव से ही मिशनरी है। वे शिष्य जिन्हें प्रभु येसु ने सुसमाचार सुनाने के लिए भेजा था, आनन्द के साथ वापिस लौटे।

ख्रीस्तीय-आनन्द मिशन का आनन्द है और वह आनन्द है; अपने जीवन और अच्छे उदाहरण द्वारा अपने आसपास रहने वाले लोगों के बीच में प्रभु येसु की गवाही देना, उसे उनके सामने प्रस्तुत करना। मुक्ति का शुभ संदेश इसमें हमारी मदद करता और हमें प्रेरणा देता है। मैं कामना करता हूँ कि हमारा आगरा महाधर्मप्रांत भी सुसमाचार की शक्ति से सम्पन्न होकर मिशनरी कार्यों में संलग्न रहे। सुसमाचार का आनन्द हमारे दिलों को भर दे। मिशन दिवस पर दिया जाने वाला चन्दा, चाहे कितना भी कम क्यों न हो, समस्त कलीसिया के मिशनरी कार्यों को मजबूत बनाएगा। ईश्वर खुशी से (दान) देने वाले से प्रसन्न होता है।

अक्टूबर महीना त्योहारों का महीना है। दशहरा, ईद और दीपावली ऐसे त्योहार हैं जिसमें हम सब भाग लेते हैं। जब हम अपने मित्रों और पड़ोसियों के साथ इन त्योहारों को मनाते और उन्हें शुभकामनाएं देते हैं, हमारे जीवन आनन्द से भर जाएं।

ख्रीस्तीय जीवन की समृद्धि हमारे आंतरिक जीवन के अर्थपूर्ण नवीनीकरण में अनुभव होती है। हमारे धर्मप्रांत के सभी पुरोहित 5-10 अक्टूबर और 20-24 अक्टूबर तक दो दलों में कथीड्रल हाउस में वार्षिक आध्यात्मिक साधना में भाग लेंगे। मेरी प्रार्थना है कि यह साधना कलीसिया और उसके मिशन के प्रति हमारा आश्वासन और सहारे से हमारे पुरोहित अपनी सेवकाई करने में सतर्क रहेंगे। आप सबसे अनुरोध है कि आप अपने पुरोहितों के पवित्रीकरण के लिए प्रार्थना में साथ रहें ताकि उनकी पवित्र सेवकाई फलप्रद हो।

कलीसिया में **मिशन के लिए** और **परिवारों के लिए प्रार्थना** करना एक प्राचीन परंपरा रही है। सबसे साधारण, लोकप्रिय और आसाना प्रार्थना है- माला विनती की प्रार्थना। हालाँकि बारम्बार दोहराई जाने वाली यह पारंपरिक माला विनती माता मरियम को समर्पित है, लेकिन फिर भी इसके केन्द्र में प्रभु येसु ख्रीस्त और उनका रहस्यात्मक प्रेम है। माला के पाँच भेदों के द्वारा हम ख्रीस्त जो स्वंय पिता ईश्वर का प्रतिरूप हैं, के व्यक्तित्व पर मनन करते हैं। वही ख्रीस्त स्वर्गराज्य की ओर अग्रसर सांसारिक संघर्षों में लिप्त हरेक मनुष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। अक्टूबर महीना माला विनती को समर्पित महीना हैं। 7 अक्टूबर को माला की महारानी का पर्व है। जब हम तन, मन में भक्ति भावना के साथ अपनी उंगलियों में माला फेरते हैं, और ''**प्रणाम मरिया**'' व ''**प्रणाम रानी**'' जाप

करते हैं, उस समय बेशक हमारा मन कितना भी भटक रहा हो, हम कृपाओं की माता मरियम के पवित्र और निष्कलंक हृदय से जुड़े रहते हैं।

संत योहन पौलुस द्वितीय की व्यक्तिगत साक्षी हमें चाहे हम व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से माला विनती बोलते हों, माला विनती के प्रति भक्ति भावना भर देती है। वे कहते हैं, ''माला विनती जाप के द्वारा धन्य कुँवारी से मैंने कितनी कृपाएं प्राप्त की हैं? मेरे जीवन में आनन्द और मुश्किलों के क्षणों में माला (रोज़री) हमेशा मेरे साथ रही है। न जाने कितनी आवश्यक बातों/ विषयों को मैंने माला विनती को समर्पित किया है, इसी विनती में दिलासा मिलता है।''

जम्मू-कश्मीर और देश के उत्तर-पूर्वी राज्यों में बाढ़ की विभीषिका से प्रभावित लोगों की दुर्दशा हमारा ध्यान बरबस अपनी ओर खींच लेती है। कलीसिया के रूप में मिलजुलकर हमें उनकी सहायता करने को आगे आना होगा। **कैरीतास-इण्डिया संस्था** के माध्यम से इस चन्दे को जरूरतमंद लोगों और स्थानों तक पहुँचाया जाता है। ईश्वर हमारा मददगार, संरक्षक और मार्गदर्शक है।

ईश्वर आपको आशीष दे।

डॉ. आल्बर्ट डिसूज़ा (आगरा के महाधर्माध्यक्ष)

ARCHBISHOP'S ENGAGEMENTS (OCTOBER - 2014)

3 Departure to Bareilly for Episcopal Consecration

5 Holy Mass, Feast of St. Theresa, Kosikalan
Priests' Annual Retreat begins

10 Priests' Annual Retreat ends
Departure on Vacation

31 Arrival in Agra

OFFICIAL

We are reminded by the Holy See, of the priority and importance of observing Mission Sunday every year. Mission Sunday falls on October 19th this year. Importance this year is of the completion of 50 years of Vatican II and of the Apostolic Exhortation "Ad Gentes" (MISSIONS).

It is urged that our Archdiocesan Mission Sunday contribution may be improved. The message of the Holy Father on Mission Sunday is being published in this issue of Agradiance.

I appeal to the Christian communities, communities of Religious, Institutions and individuals in the Parish/Mission station to make a positive, substantial contribution on Mission Sunday which will be forwarded to the Pontifical Society of the Propagation of Faith, which is the Pope's own missionary organization.

All such collections from Parishes, Institutions, communities, are to be sent to the Curia, the earliest possible, latest by the end of October / early November. The amount will be forwarded to the PMO immediately.

Contributions on Mission Sunday are an integral aspect of our faith confession, experience and expression. Our vocation to priesthood rests on this zeal. It is an occasion for us to promote the missions and to understand the responsibility of every Christian to be a missionary. It should be a felt need to have an active role in missionary objectives: The joy of believing is at the same time, the joy of sharing our faith with others.

Another important event draws our attention. The III Extra-ordinary General Assembly of the

Synod of Bishops is due to be held from October 5-19, 2014 in Rome on the theme: "The Pastoral Challenges of the Family in the Context of Evangelization". The Holy See urges us to support the event through our fervent prayers. The significant deliberations will be directly dealing with marriage and family life. This will provide the right catechesis on family life. The family is "the first and vital cell of society". We are asked to pray for the Synod and for all our families.

This issue of the Agradiance carries the prayer to the Holy Family (composed by the Holy Father) to be recited from September 28th, 2014, especially during the days of the Synod. You shall find the Hindi and English version of the prayer here in this issue of the Agradiance.

The proposed retreat days for the Priests in Archdiocese in two batches are the special days of grace to our Archdiocese. The faithful are requested to pray for the priests.

With my cordial affections, best wishes and God bless.

Yours devotedly in Christ,

Albert D'Souza (Archbishop of Agra)

Prayer for the Extraordinary General Assembly of the Synod of Bishops 5-19 October

The III Extraordinary General Assembly of the Synod of Bishops is scheduled to take place from 5 to 19 October to treat the topic: "The Pastoral Challenges of the Family in the Context of Evangelization".

We are invited to pray for this intention during Mass and at other liturgical celebrations especially during the recitation of the Holy Rosary in the days leading to the synod and during the synod itself.

Prayer to the Holy Family for the Synod composed by Pope Francis:

Jesus, Mary and Joseph, in you we contemplate the splendour of true love, to you we turn with trust. Holy Family of Nazareth, grant that our families too may be places of communion and prayer, authentic schools of the Gospel and small domestic Churches.

Holy Family of Nazareth, may families never again experience violence, rejection and division: may all who have been hurt or scandalized find ready comfort and healing.

Holy Family of Nazareth, may the approaching Synod of Bishops make us once more mindful of the sacredness and inviolability of the family, and its beauty in God's plan.

Jesus, Mary and Joseph, graciously hear our prayer. **Amen.**

पवित्र परिवार से प्रार्थना

हे येसु, मरियम और यूसुफ, आपसे हम प्रार्थना करते हैं। हे सच्चे प्रेम के गौरव! पूर्ण विश्वास के साथ हम आपकी शरण में आते हैं। हे नाज़रेत के पवित्र परिवार, ऐसी आशिष दे, कि हमारे परिवार एकता और प्रार्थना के केन्द्र बनें, सुसमाचार ही मौलिक पाठशाला तथा लघु घरेलू कलीसिया बन जाएं। हे नाज़रेत के पवित्र परिवार, ऐसी कृपा दे, कि हमारे परिवारों में फिर से हिंसा, बहिष्कार और फूट न हो। जिन परिवारों को किसी भी कारण से ठेस पहुँची है अथवा अपमान या अपयश सहना पड़ा है, उन्हें सांत्वना और चंगाई मिले। हे नाज़रेत के पवित्र परिवार, अक्टूबर महीने में होने वाली धर्माध्यक्षों की धर्मसभा हमें परिवार की पवित्रता और एकता की याद दिलाए और हमारे लिए ईश्वर की योजना की सुन्दरता का आभास कराए। हे येसु, मरियम और यूसुफ, दर्यापूर्वक हमारी प्रार्थना सुनिए! **आमेन!**

MESSAGE OF POPE FRANCIS FOR WORLD MISSION DAY 2014

Dear Brothers and Sisters,

Today vast numbers of people still do not know Jesus Christ. For this reason, the mission ad gentes continues to be most urgent. All the members of the Church are called to participate in this mission, for the Church is missionary by her very nature: she was born "to go forth". World Mission Day is a privileged moment when the faithful of various continents engage in prayer and concrete gestures of solidarity in support of the young Churches in mission lands. It is a celebration of grace and joy. A celebration of grace, because the Holy Spirit, sent by the Father, offers wisdom and strength to those who are obedient to his action. A celebration of joy, because Jesus Christ, the Father's Son, sent to evangelize the world, supports and accompanies our missionary efforts. This joy of Jesus and missionary disciples leads me to propose a biblical icon, which we find in the Gospel of Luke (cf. 10:21-23) .

1. The Evangelist tells us that the Lord sent the seventy-two disciples two by two into cities and villages to proclaim that the Kingdom of God was near, and to prepare people to meet Jesus. After carrying out this mission of preaching, the disciples returned full of joy: joy is a dominant theme of this first and unforgettable missionary experience. Yet the divine Master told them: "Do not rejoice because the demons are subject to you; but rejoice because your names are written in heaven. At that very moment Jesus rejoiced in the Holy Spirit and said: 'I give you praise, Father...' And, turning to the disciples in private he said, 'Blessed are the eyes that see what you see'" (Lk 10:20-21, 23).

Luke presents three scenes. Jesus speaks first to his disciples, then to the Father, and then again to the disciples. Jesus wanted to let the disciples share his joy, different and greater than anything they had previously experienced.

2. The disciples were filled with joy, excited about their power to set people free from demons. But Jesus cautioned them to rejoice not so much for the power they had received, but for the love they had received, "because your names are written in heaven" (Lk10:20). The disciples were given an experience of God's love, but also the possibility of sharing that love. And this experience is a cause for gratitude and joy in the heart of Jesus. Luke saw this jubilation in a perspective of the trinitarian communion: "Jesus rejoiced in the Holy Spirit", turning to the Father and praising him. This moment of deep joy springs from Jesus' immense filial love for his Father, Lord of heaven and earth, who hid these things from the wise and learned, and revealed them to the childlike (cf. Lk10:21). God has both hidden and revealed, and in this prayer of praise it is his revealing which stands out. What is it that God has revealed and hidden? The mysteries of his Kingdom, the manifestation of divine lordship in Jesus and the victory over Satan.

God has hidden this from those who are all too full of themselves and who claim to know everything already. They are blinded by their presumptuousness and they leave no room for God. One can easily think of some of Jesus' contemporaries whom he repeatedly admonished, but the danger is one that always exists and concerns us too. The "little ones", for

their part, are the humble, the simple, the poor, the marginalized, those without voice, those weary and burdened, whom Jesus pronounced "blessed". We readily think of Mary, Joseph, the fishermen of Galilee and the disciples whom Jesus called as he went preaching.

3. "Yes, Father, for such has been your gracious will" (Lk 10:21). These words of Jesus must be understood as referring to his inner exultation. The word "gracious" describes the Father's saving and benevolent plan for humanity. It was this divine graciousness that made Jesus rejoice, for the Father willed to love people with the same love that he has for his Son. Luke also alludes to the similar exultation of Mary: "My soul proclaims the greatness of the Lord, and my spirit exults in God my Savior" (Lk 1:47). This is the Good News that leads to salvation. Mary, bearing in her womb Jesus, the evangelizer par excellence, met Elizabeth and rejoiced in the Holy Spirit as she sang her Magnificat. Jesus, seeing the success of his disciples' mission and their resulting joy, rejoiced in the Holy Spirit and addressed his Father in prayer. In both cases, it is joy for the working of salvation, for the love with which the Father loves his Son comes down to us, and through the Holy Spirit fills us and grants us a share in the trinitarian life.

The Father is the source of joy. The Son is its manifestation, and the Holy Spirit its giver. Immediately after praising the Father, so the evangelist Matthew tells us, Jesus says: "Come to me, all you who labour and are burdened, and I will give you rest. Take my yoke upon you and learn from me, for I am meek and humble of heart, and you will find rest for yourselves. For my yoke is easy and my burden light" (Mt 11:28-30). "The joy of the Gospel fills the hearts and lives of all who encounter Jesus. Those who accept his offer of salvation are set free from sin, sorrow, inner emptiness and loneliness. With Christ joy is constantly born anew" (Evangelii Gaudium, 1).

The Virgin Mary had a unique experience of this encounter with Jesus, and thus became "causanostraelaetitiae". The disciples, for their part, received the call to follow Jesus and to be sent by him to preach the Gospel (cf. Mk 3:14), and so they were filled with joy. Why shouldn't we too enter this flood of joy?

4. "The great danger in today's world, pervaded as it is by consumerism, is the desolation and anguish born of a complacent yet covetous heart, the feverish pursuit of frivolous pleasures, and a blunted conscience" (Evangelii Gaudium, 2). Humanity greatly needs to lay hold of the salvation brought by Christ. His disciples are those who allow themselves to be seized ever more by the love of Jesus and marked by the fire of passion for the Kingdom of God and the proclamation of the joy of the Gospel. All the Lord's disciples are called to nurture the joy of evangelization. The Bishops, as those primarily responsible for this proclamation, have the task of promoting the unity of the local Church in her missionary commitment. They are called to acknowledge that the joy of communicating Jesus Christ is expressed in a concern to proclaim him in the most distant places, as well as in a constant outreach to the peripheries of their own territory, where great numbers of the poor are waiting for this message.

Many parts of the world are experiencing a dearth of vocations to the priesthood and the consecrated life. Often this is due to the absence of contagious apostolic fervour in communities which lack enthusiasm and thus fail to attract. The joy of the Gospel is born of the encounter with Christ and from sharing with the poor. For this reason I encourage parish communities,

associations and groups to live an intense fraternal life, grounded in love for Jesus and concern for the needs of the most disadvantaged. Wherever there is joy, enthusiasm and a desire to bring Christ to others, genuine vocations arise. Among these vocations, we should not overlook lay vocations to mission. There has been a growing awareness of the identity and mission of the lay faithful in the Church, as well as a recognition that they are called to take an increasingly important role in the spread of the Gospel. Consequently they need to be given a suitable training for the sake of an effective apostolic activity.

5. "God loves a cheerful giver" (2 Cor 9:7). World Mission Day is also an occasion to rekindle the desire and the moral obligation to take joyful part in the mission ad gentes. A monetary contribution on the part of individuals is the sign of a self-offering, first to the Lord and then to others; in this way a material offering can become a means for the evangelization of humanity built on love.

Dear brothers and sisters, on this World Mission Day my thoughts turn to all the local Churches. Let us not be robbed of the joy of evangelization! I invite you to immerse yourself in the joy of the Gospel and nurture a love that can light up your vocation and your mission. I urge each of you to recall, as if you were making an interior pilgrimage, that "first love" with which the Lord Jesus Christ warmed your heart, not for the sake of nostalgia but in order to persevere in joy. The Lord's disciples persevere in joy when they sense his presence, do his will and share with others their faith, hope and evangelical charity.

Let us pray through the intercession of Mary, the model of humble and joyful evangelization, that the Church may become a welcoming home, a mother for all peoples and the source of rebirth for our world.

From the Vatican, 8 June 2014, the Solemnity of Pentecost **- POPE FRANCIS**

विश्व मिशन दिवस, 2014 के लिए संत पिता फ्रांसिस का सन्देश

प्रिय भाइयों और बहनो,

आज भी बहुत सारे लोग येसु मसीह को नहीं जानते हैं। इसी कारण से **मिशन एद जेन्तेस** आज भी बहुत महत्वपूर्ण है। कलीसिया के सभी सदस्य इस मिशन में भागी होने के लिए बुलाए गए हैं, क्योंकि कलीसिया स्वभाव से ही मिशनरी है। कलीसिया का उद्गम (जन्म) ही आगे बढ़ने/विकसित होने के लिए हुआ है। विश्व मिशन दिवस एक सुनहरा अवसर है, जब विभिन्न महाद्वीपों के विश्वासी मिशनरी क्षेत्रों में नई/युवा कलीसियाओं के साथ सहभागिता दर्शाते हुए प्रार्थना और ठोस कामों में संलग्न हो सकते हैं। यह कृपा और आनन्द का समारोह है, क्योंकि पिता द्वारा भेजी गई पवित्र आत्मा उन सबको प्रज्ञा और शक्ति प्रदान करती है जो उसके प्रति आज्ञाकारी हैं। यह आनन्द का समारोह है, क्योंकि परमेश्वर का पुत्र येसु मसीह, हमारे मिशनरी प्रयासों में हमारी सहायता करता और साथ देता है। प्रभु येसु के इस आनन्द से प्रेरित होकर मैं आपके सम्मुख प्रभु येसु की एक प्रतिमा प्रस्तुत करना चाहता हूँ, जिसे हम संत लूकस के सुसमाचार (10:21-23) में पाते हैं।

सुसमाचार लेखक हमें बताते हैं, कि प्रभु येसु ने अपने बहत्तर शिष्यों को दो-दो करके निकटवर्ती उन सभी गाँवों-कस्बों में भेजा, जहाँ वे स्वयं जाने वाले थे। शिष्यों ने वहाँ जाकर लोगों को प्रभु येसु से मिलने के लिए तैयार किया। शुभ सन्देश सुनाने का मिशन पूरा करके शिष्य आनन्द के साथ वापिस लौटे। आनन्द मिशनरी अनुभव का पहला और सबसे महत्वपूर्ण भाग

है। फिर भी प्रभु स्वामी उनसे कहता है, ''इसलिए आनन्दित न हो, कि... धन्य हैं वे आँखें, जो वह हैं, जिसे तुम देख रहे हो।'' (लूकस 10:20-21, 23)

1. संत लूकस हमारे सामने तीन दृष्य प्रस्तुत करते हैं, जिसमें प्रभु येसु पहले अपने शिष्यों से बात करते हैं। उसके बाद पिता से और फिर दोबारा अपने शिष्यों से। प्रभु येसु चाहते थे कि उनके शिष्य भी उनके आनन्द के सहभागी बनें।

2. शिष्य आनन्द से भरे थे। वे इस बात से भी उत्तेजित थे, कि उनके पास लोगों को दुष्टात्माओं से चंगा करने की शक्ति थी। परन्तु प्रभु येसु उन्हें चेतावनी देते हैं, कि ''इसलिए आनन्दित न हो, कि अपदूत तुम्हारे अधीन हैं, बल्कि इसलिए आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं।'' (लूकस 10:20)। शिष्यों को ईश्वर के प्रेम को अनुभव करने का एक अवसर दिया गया, साथ ही उस प्रेम को दूसरों के साथ बाँटने का मौका भी मिला। यह अनुभव उनकी कृतज्ञता का मुख्य कारण था। संत लूकस इस आनन्द को पवित्र त्रित्व के दृष्टिकोण से देखते हैं, ''उसी घड़ी ईसा ने पवित्र आत्मा से... यही तुझे अच्छा लगा।'' (लूकस 10:21)। इस धन्यवाद की प्रार्थना में ईश्वर अपने स्वर्गराज्य के भेद को हम पर प्रकट करते हैं, अर्थात् प्रभु येसु में दैवीय प्रभुत्व और दृष्टात्मा पर विजय देखते हैं।

ईश्वर ने उन लोगों से इन रहस्यों को छिपा लिया है, जो अहम से भरे हैं और जो लोग यह दावा करते हैं, कि वे सब कुछ जानते हैं। वे अपनी घृष्टता से अन्धे हो चुके हैं और ईश्वर के लिए उनकी जिन्दगी में कोई स्थान नहीं है। हम में येसु के युग के उन लोगों को अब आसानी से समझ सकते हैं, जिन्हें प्रभु येसु समय-समय पर फटकारते हैं। वही भय आज भी हमारे सामने विद्यमान है। प्रभु येसु के नन्हे या निर्बल लोग वही हैं, जो लोग विनम्र, साधारण, निर्धन और हाशिए पर हैं, जिनके पास (अपनी) आवाज नहीं है, जो थके और बोझ से दबे हैं। इन्हीं को प्रभु येसु ''**धन्य**'' कहते हैं। हमारे मन में तुरन्त ही मरियम, यूसुफ, गलीली के उन मछुआरों और शिष्यों का ध्यान आता है, जिन्हें प्रभु येसु ने प्रचार कार्य के लिए बुलाया था।

3. ''हाँ पिता, यही तुझे अच्छा लगा'' (लूकस 10:21)। यह प्रभु येसु के हृदय की आन्तरिक जय-जयकार है। अच्छा से अभिप्राय, समस्त मानवजाति को बचाने की पिता की कल्याणकारी योजना है। संत लूकस धन्य कुँवारी मरियम के प्रशंसागान का भी इसी प्रकार उल्लेख करते हैं, ''मेरी आत्मा प्रभु का गुणगान करती है और मेरा मन अपने मुक्तिदाता ईश्वर में आनन्द मनाता है'' (लूकस 1:47) मरियम, प्रभु येसु (सर्वोत्तम सुसमाचार प्रचारक) को अपने गर्भ में धारण कर एलिजाबेथ से मिलती हैं और पवित्रात्मा में आनन्द मनाते हुए प्रशंसा गान गाती हैं। प्रभु येसु अपने शिष्यों की सफलता पर पवित्र आत्मा में आनन्द मनाते और पिता ईश्वर को सम्बोधित करते हैं। इन दोनों परिस्थितियों में यह मुक्ति का आनन्द है, क्योंकि पिता अपने पुत्र प्रभु येसु को प्रेम करते हैं, वैसे उसी प्रेम से पुत्र हमसे प्रेम करता है और उन्हें पवित्र आत्मा से भर देता है। वह हमें पवित्र त्रित्व के जीवन में भाग लेने का आनन्द प्रदान करता है। पिता आनन्द का स्रोत है। पुत्र उस आनन्द को प्रकट करता है और आत्मा देता है। पिता की स्तुति करने के तुरंत बाद, जैसा कि सुसमाचार लेखक मत्ती बताते हैं, ''प्रभु येसु कहते हैं- थके माँदे और बोझ से दबे हुए लोगों... बोझ हल्का।'' (मत्ती 11:28-30)। सुसमाचार का आनन्द उन सब लोगों के हृदय और जीवन को भर देता है, जो प्रभु येसु से मिलते हैं... ख्रीस्त के साथ हमारा सम्बन्ध निरन्तर नया होता जाता है। (एवेंजली गादियुम)।

कुँवारी मरियम को प्रभु येसु से भेंट का अद्वितीय अनुभव मिला और इस तरह वो हमारे आनन्द का कारण बन गईं। शिष्यों ने प्रभु का अनुसरण करने और सुसमाचार का प्रचार करने की बुलाहट पाई (मरकुस 3:14), इसलिए वे आनन्द से भर गए। हम भी क्यों न आनन्द के इस प्रवाह में शामिल हो जाएं?

4. उपभोक्तावाद के इस युग में सबसे बड़ा खतरा एक आत्म संतुष्ट, फिर भी लोभी हृदय से जन्मे सूनेपन और व्यथा, तुच्छ भोगविलास पाने की अंधी दौड़ और कुण्ठित विवेक (ए. गा. 2)। मानवता प्रभु ख्रीस्त द्वारा हासिल की गई मुक्ति को अतिशीघ्र पाना चाहती है। उसके शिष्य वे हैं, जो स्वयं को प्रभु येसु के प्रेम से संचालित होने देते हैं और ईश-राज्य के प्रति प्रेम की ज्वाला से प्रज्वलित होकर आनन्द के सुसमाचार की घोषणा करने को तत्पर रहते हैं। प्रभु के सभी शिष्य सुसमाचार प्रचार के आनन्द को पोषित करने के लिए आमंत्रित किए जाते हैं। सभी धर्माचार्यों का, जो सुसमाचार घोषणा के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं, यह कर्तव्य है कि वे स्थानीय कलीसिया में एकता बनाए रखें। उन्हें यह सुनिश्चित करना है कि प्रभु येसु सुसमाचार प्रसार का आनन्द दूरदराज इलाकों में तो फैले ही, साथ अपनी सीमा में भी इसे उन लोगों तक पहुँचाना है, जहाँ विशाल संख्या में लोग प्रभु का संदेश सुनने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं।

आज विश्व के बहुत से भागों में पुरोहितिक और धर्मसमाजीय जीवन की बुलाहट का अकाल सा छाया हुआ है। प्राय: यह हमारे समुदायों में संक्रामक प्रेरितिक धर्मोत्साह की कमी के कारण होता है, फलस्वरूप हम दूसरों को आकर्षित करने में असफलत रहते हैं। सुसमाचार का आनन्द ख्रीस्त के साथ भेंट और उसके सुसमाचार को दूसरों के साथ बाँटने से जन्मता है। इस कारण से मैं सभी पल्ली-समुदायों, धार्मिक संस्थाओं और समूहों से आह्वान करता हूँ कि वे प्रभु येसु के प्रेम और सर्वाधिक भातृत्व जीवन जीएं। जहाँ आनन्द, उत्साह और प्रभु येसु को दूसरों तक पहुँचाने की इच्छा है, वहाँ सच्ची बुलाहटें पनपती हैं। इन बुलाहटों के बीच हमें मिशन के लिए लोकधर्मियों की बुलाहट को नजर अन्दाज नहीं करना चाहिए। कलीसिया लोकधर्मियों की बुलाहट के प्रति जागरुकता और उनकी पहचान तेजी से बढ़ती जा रही है। साथ ही उनकी यह पहचान भी शीघ्रता से बनती जा रही है कि वे सुसमाचार प्रचार के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निबाहने के लिए बुलाए गए हैं। फलस्वरूप उन्हें एक प्रभावशाली प्रेरितिक जिम्मेदारी निबाहने के लिए समुचित ट्रेनिंग दिया जाना जरूरी है।

5. ''ईश्वर प्रसन्नता से देने वाले को प्यार करता है'' (2 कुरु. 9:7)। **विश्व मिशन दिवस** अपने मिशन कार्यों (एद जेन्तेस) में सानन्द सक्रिय भाग लेने की अपनी नैतिक जिम्मेदारी और इच्छा को पुन: समझने और जागृत करने का अवसर भी है। लोगों द्वारा आर्थिक सहायता या चन्दा देना उनके साथ स्वयं समर्थन की निशानी है; स्वंय-समर्थन, पहले प्रभु के प्रति और फिर दूसरों के प्रति। इस तरह आर्थिक मदद प्रेम पर आधारित मानवता के प्रचार-प्रसार के लिए एक उदाहरण बन जाती है।

प्रिय भाईयों-बहनों, इस **विश्व मिशन दिवस** पर मेरा ध्यान सभी स्थानीय कलीसियाओं की ओर जाता है। हम सुसमाचार प्रचार के इस आनन्द को लुटने न दें। मैं आपका आह्वान करता हूँ, कि सुसमाचार के आनन्द में आप अपने को पूर्ण रूप से मग्न कर लें और एक ऐसे प्रेम से पोषित हों, जो आपकी बुलाहट और मिशन को संजोए रखे। मैं आप सबसे आग्रह करता हूँ कि आप अपने अंतरतम में एक तीर्थयात्रा करें, ताकि वह ''पहला प्रेम'' जिससे प्रभु येसु ने आपके हृदय को भर दिया था, आप में हमेशा बना रहे। प्रभु के शिष्य इसी आनन्द में बने रहें, जब उन्होंने उसकी उपस्थिति को महसूस किया, उसकी इच्छा पूरी की और अपने विश्वास, भरोसे और प्रेम को दूसरों के साथ बाँटा।

आइए, हम धन्य कुँवारी मरियम, जो विनम्रता और आनन्दपूर्ण धर्मकार्य का आदर्श हैं, की प्रार्थनाओं की मध्यस्थता द्वारा यह निवेदन करें कि हमारी कलीसिया सबके स्वागत के लिए एक घर बने, सभी लोगों के लिए एक माँ और हमारे ब्रह्माण्ड के लिए नवजन्म का आधार बने।

(पेन्तेकोस्त के महापर्व (8 जून 2014) को वाटिकन से भेजा गया) **-महामहिम संत पिता फ्रांसिस**

सामाजिक परिवर्तन मे शिक्षा की भूमिका

समाज की बदलती हुई आवश्यकतायें तथा विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र मे तेजी से विकसित होती दुनिया के साथ चलने के लिए समाज मे परिवर्तन आवश्यक है और इसमे शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है।

अंग्रेजो के आने से पूर्व भारत मे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का चलन था परन्तु यह शिक्षा समाज के सभी बच्चों के लिए नहीं थी। केवल कुछ विशिष्ट बच्चों को ही शिक्षा मिल पाती थी। परन्तु अंग्रेजों ने आकर एक नवीन शिक्षा प्रणाली लागू की, जिसमें उन्होने प्राथमिक शिक्षा पर विशेष जोर डाला परन्तु यह प्रयास सफल नहीं हुआ। जब भारत आजाद हुआ तब देश में साक्षरता की दर 18.33% थी, जिससे ये ज्ञात होता है कि अधिकांश जनता निरक्षर थी।

उसके बाद सरकार ने समाज की शिक्षा एंव विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाऐं बनायीं जो इस दिशा में सतर्क प्रयास सिद्ध हुए। बाद में सरकार ने शिक्षा के अधिकार को मूलभूत अधिकार का दर्जा देते हुए कानून भी पारित किया। सन् 2011 में भारत की साक्षरता दर 73% नोट की गई। आज की तारीख मे गली-गली मे खुले हुये विद्याालय, हजारों की संख्या में महाविद्यालय, 600 से अधिक विश्वविद्यालय, IIT, Medical Colleges और तकनीकी शिक्षा संस्थानों की उपस्थिति के बावजूद भी 100% साक्षरता एक स्वप्न ही रह गया है।

शिक्षा समाज, बच्चों और देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण है और यह लोगो का मूल अधिकार भी है। शिक्षा का द्वार यदि सभी बच्चों के लिए खोल दिया जाये, विशेषकर लड़कियों के लिए, तो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही गरीबी को हटाने के लिए एक विशेष एवं सराहनीय प्रयास होगा क्योंकि शिक्षा आन्तरिक रुप से विकास के सभी लक्ष्यों से जुड़ी हुई है जैसे महिला सशक्तिकरण, बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास, भूखमरी हटाना, HIV/ Aids जैसी बिमारियों को रोकना तथा उनसे बचाव, आर्थिक विकास को नई ऊचाईयों तक ले जाना तथा समाज में शन्ति की स्थापना करना आदि।

विभिन्न शोध कार्यो पर आधारित आंकड़ो के अनुसार पढ़ी लिखी महिलायें अपने बच्चों को जीवन की बेहतर शुरुआत देती हैं। टीकाकरण एवं महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़ी अनेक सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ अशिक्षा के कारण ही लोगो को नहीं मिल पाता है।

केन्या मे जब महिला किसानों को पुरुषों के समान कृषि संबन्धी जानकारी दी गयी तो उनकी फसलों के उत्पादन में 22% की वृद्वि हुई। यदि महिलाऐं पढ़ेंगी तो आर्थिक एवं मानसिक रुप से सशक्त होंगी तथा अपने एवं अपने परिवार कल्याण के लिए अनेक निर्णय लेने मे सक्षम होंगी। हर साल हमारे देश मे बहुत सारे बच्चे छोटी-बड़ी बिमारियों से मर जाते हैं, उनमें से बहुतों को आसानी से बचाया जा सकता है परन्तु अशिक्षा एवं कुरीतियों के कारण ऐसा नहीं हो पाता।

महान दार्शनिक सुकरात जो एक शिक्षक भी थे, के शब्दों में – ''केवल एक अच्छाई है ज्ञान, और एक बुराई है अज्ञान''''दिमाग ही सब कुछ है, जो आप सोचते हैं वो बन जाते हैं। मैं किसी को भी कुछ नहीं सिखा सकता। मैं केवल उन्हें विचारवान बना सकता हूँ।'' अब्दुल कलाम के अनुसार काला रंग (Black Colour) भावनात्मक रूप से बुरा होता है परन्तु Black Board विद्यार्थियों के जीवन को उज्जवल बनाता है। विद्यार्थियों को ऊर्जावान बनाता है। शिक्षाविद अरस्तु के शब्दों में – ''माता-पिता तो जीवन देते है परन्तु जीने की कला तो शिक्षक ही सिखाते हैं।''

आचार्य कृष्णमूर्ति के शब्दों में – ''विद्यालय खोलने का मकसद बच्चों में उच्चकोटि की तकनीकी क्षमता का विकास करना है ताकि वे दुनिया में पूरी दक्षता के साथ

काम कर सकें। शिक्षा में मानवीय गुणों का समावेश हो। वह खुद से सीखें और प्रकृति से सामन्जस्य स्थापित कर अपने और समाज को एक दृष्टि दें।'' जब तक आदमी की सोच नहीं बदलेगी तब तक समाज नहीं सुधरेगा। ''आवश्यकता है मनुष्य में सर्वांगीण परिवर्तन की।''

मार्टिन लूथर किंग का कहना है ''हमें यह याद रखना होगा कि केवल किताबी ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, उसके साथ नैतिकता एवं सुदृढ़ चरित्र की आवशयकता भी है।''

फादर जिप्सन पलाट्टी (प्रधानाचार्य)
सेन्ट पॉल्स इण्टर कॉलेज, आगरा

Archdiocesan Pastoral Council Meeting

Agra, Sunday, September 28, 2014- The Annual General meeting of Agra Pastoral Council was held on September 28, 2014, at the Pastoral Centre, Agra. Besides its Office Bearers, Directors of various Apostolates, the representatives from all parishes and mission stations participated in it. His Grace Most Rev. Dr. Albert D'Souza inaugurated the Council meeting. In his Presidential Address, he spoke on the active participation of the Parish Council in every parish. He stressed upon the need of family prayer and faith formation.

Rev. Fr. Santosh D'Sa welcomed everyone. Rev. Fr. Bhaskar Jesuraj conducted the Council meeting. With the use of a Power Point presentation he dealt with the topic very convincingly.

Later, two representatives from all five deaneries (Agra, Aligarh, Etawah, Mathura and Noida) were elected, who will meet again in the coming months. The meeting was held in view of preparing the Archdiocese for the forthcoming Synod of Bishops, next October (2015).

मेरे जीवन की एक सच्ची घटना

एक दिन सीढ़ी से गिरने के कारण मेरा दायां हाथ टूट गया। पापा मुझे डॉक्टर के पास लेकर गए। मेरे हाथ की हड्डी टेढ़ी हो गई थी और बहुत दर्द भी कर रही थी। मेरा दर्द बंद नहीं हो रहा था। मेरी मम्मी मेरे लिए चर्च में जाकर प्रार्थना कर रहीं थीं। फिर एक दिन मैंने मम्मी से बोला, ''मम्मी मैं भी आपके साथ आराधना में जाऊँगी'' और मैं मम्मी के साथ आराधना में गई। वहाँ जाने से मेरा दर्द थोड़ा ठीक हो गया। फिर एक चंगाई की प्रार्थना थी, मैं उसमें भी गई। जब मैं प्रार्थना में प्रवचन सुन रही थी तो मैंने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए। इससे मुझे दर्द का अनुभव बिल्कुल भी नहीं हुआ और मैं आश्चर्यचकित रह गई। इससे पहले मैं जब भी अपना हाथ जरा सा भी ऊपर करती या थोड़ा सा भी भारी काम करती तो मेरा हाथ बहुत दर्द करता था। डॉक्टर ने भी बोला था कि इनका आपरेशन करा दो। इसके लिए हमारे पैसा नहीं था। मैं दर्द के कारण बहुत रोती थी। परन्तु प्रभु ने मुझे अब बिल्कुल स्वस्थ कर दिया है और मैंने आराधना में दोनों हाथ ऊपर उठाए। दर्द नहीं हुआ, प्रभु ने मेरे दर्द को दूर कर दिया और जब मैं प्रार्थना खत्म होने के बाद बाहर निकली तो मैं बहुत खुश हुई। मैंने विश्वास के साथ प्रार्थना में भाग लिया और मैंने मम्मी को बताया कि मेरा हाथ बिल्कुल भी दर्द नहीं कर रहा है। मम्मी बोली, 'बेटी तुमने विश्वास के साथ प्रार्थना की और प्रभु ने तुम्हें ठीक कर दिया।' मैं विश्वास के साथ घर गई। अब मैं अपना हर काम जिस हाथ की हड्डी टूटी हुई थी, उससे कर लेती हूँ और भारी चीज भी उठा लेती हूँ। मेरा हाथ पूर्ण रूप से ठीक हो गया है किसी प्रकार का कोई दर्द नहीं होता। अब मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। प्रभु के प्रति मेरा विश्वास और बढ़ गया है। हमें नित्य प्रार्थना करनी चाहिए और कभी हिम्मत नहीं हारना चाहिए।

एलिज़ा वेल्स, सेंट विन्सेन्ट हाईस्कूल, आगरा

दु:खित माता का पर्व एवं सिस्टर रोज़ी की रजत जयंती समारोह सम्पन्न

सोमवार 15 सितम्बर 2014 को कनोसा धर्मसमाज की धर्मबहनें बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ दु:खित माता का पर्व एवं सुपीरियर सिस्टर रोज़ी माड़वना की रजत जयंती समारोह मनाने के लिए सेन्ट पैट्रिक्स चर्च के प्रांगण में एकत्रित हुईं। श्रद्धेय फादर जोस मालिएकल एवं अन्य पुरोहितों ने पवित्र मिस्सा चढ़ाया। इस समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए सिस्टर लिसी मैथ्यु (प्रोविन्शियल काउंसर) एवं धर्मप्रांत की विभिन्न धार्मिक संस्थाओं से बड़ी संख्या में धर्मबहनें, शिक्षकगण, विद्यार्थी एवं पल्लीवासी उपस्थित थे। सौभाग्य की बात थी कि इस अवसर पर सिस्टर अनीता चिलमपिल जो इस वर्ष अपनी रजत जयंती मना रही हैं एवं सिस्टर जॉन मेरी जो स्वर्ण जयन्ती मना रही हैं, भी सेंट पैट्रिक्स पल्ली में उपस्थित थीं।

मिस्सा बलिदान का आरंभ बहुत ही भक्तिभावना के साथ हुआ। गायन मण्डली के द्वारा गाए गए प्रवेश गीत के साथ ही जुबिली मना रही सभी धर्मबहनों ने पुरोहितों के साथ गिरजाघर में प्रवेश किया। सिस्टर सुवर्णा ने सभी उपस्थित अतिथिगण का स्वागत किया एवं इस समारोह के बारे में समझाया। सिस्टर रोजी द्वारा अपने धर्मिक व्रतों को दुहराया जाना एक बहुत ही भावुक क्षण था। उनकी सत्यप्रतिज्ञता और उनका दृढ़ संकल्प उनके चेहरे की आभा में स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहे थे। फादर डेनिस डिसूज़ा ने अत्यंत ही सरल रूप में सिस्टर रोजी के जीवन के विगत 25 वर्षों की नि:स्वार्थ सेवा का चित्रण अपने प्रवचन में किया। सिस्टर रोजी के शांत एवं सौम्य व्यक्तित्व की व्याख्या अपने अत्यंत ही सुंदर शब्दों में करते हुए उन्होंने कहा, कि ''धार्मिकता बड़े-बड़े कार्य करने में नहीं, अपितु धार्मिक बने रहने में हैं।'' संत पापा जॉन पॉल द्वितीय के शब्दों के साथ उन्होंने अपने प्रवचन को समाप्त किया।

परमप्रसाद वितरण के पश्चात सिस्टर रोजी ने सभी के प्रति अपना आभार प्रकट किया। तत्पश्चात इस अवसर की खुशियों को और आगे बढ़ाते हुए सभी ने सेंट पैट्रिक्स चर्च के कम्युनिटी हॉल में रजत जयंती के केक और प्रीतिभोज का आनन्द उठाया।

वास्तव में इस दिन कनोसा की सब धर्मबहनों ने सिस्टर रोजी के साथ मिलकर ईश्वर की अनुकम्पा एवं कृपा के लिए धन्यवाद दिया, कि परमेश्वर ने सिस्टर रोजी को अपने अनुग्रह के द्वारा पच्चीस वर्षों तक अपनी और अपने लोगों की सेवा करने का विशेष कृपा प्रदान की है।

डिम्पल मैसी
सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा कैन्ट

'PSOL डे' धूमधाम के साथ मनाया गया

आगरा 16 सितम्बर। बालूगंज, आगरा छावनी स्थित PSOL (माता मरियम की दीन बहनों)धर्मसमाज की आगरा और फिरोजाबाद की धर्मबहनों ने अपनी संरक्षिका दु:खित माता मरियम का वार्षिक त्योहार संयुक्त रूप से धूमधाम के साथ मनाया। पर्व की तैयारी स्वरूप तीन दिवसीय त्रिदुम का आयोजन किया गया। फादर जोसफ डाबरे, फादर राजनदास और फादर जॉन रोशन परेरा ने त्रिदुम के तीन दिनों में प्रवचन देकर धर्मबहनों को आध्यात्मिक रूप से पर्व दिवस के लिए तैयार किया। फादर मून लाजरस ने पाप स्वीकार संस्कार सम्पन्न कराया।

वैसे तो पर्व दिवस की तैयारी पिछले कई दिनों से चल रही थी, किन्तु इस वर्ष संस्था अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूरे कर रही है, इसलिए धर्मबहनों और दिव्य प्रभा के बच्चों को दोगुनी खुशी थी। पर्व दिवस की शाम 5 बजे तक सब कुछ अच्छी तरह से चल रहा था। घर पर बिजली की रोशनियाँ लग चुकी थीं, स्पीकर गाने बजाने को आतुर थे। विशाल पण्डाल में करीब 200 मेहमानों के बैठने की व्यवस्था अंतिम चरणों में भी, मुर्गे कट चुके थे, कि तभी अचानक आसमान के किसी कोने से काले-काले बादल सिर उठाने लगे और फिर सिर मुड़ाते ही ओलों के साथ मूसलाधार बारिश शुरु हो गई। हर तरफ पानी कीचड़ और उस पर बिजली फेल। हर तरफ मायूसी और बेबसी... दिल के अरमान पानी में बह गए।

तभी मसीहा आ गए। वो कहते हैं न कि जिसका कोई नहीं उसका तो खुदा है यारों... सेंट एन्थोनी कान्वेण्ट की धर्मबहनों ने आनन फानन में अपने कॉलेज का हॉल खोल दिया - भले समारी का उत्तम उदाहरण पेश किया। फादर जॉन रोशन परेरा, फादर जोसफ डाबरे और सेमीनेरी ब्रदर्स ने बिना समय गंवाए हॉल को समारोह के लिए तैयार कर दिया। सिस्टर जोस्फीन अल्बुकर्क (प्रधानाचार्या) खुद कमान संभाले नज़र आईं।

दिव्य प्रभा के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम गीत-संगीत और मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किए। फिरोजाबाद की सिस्टर ने सबका स्वागत किया। जुबली केक काटा गया। सिस्टर रीना ने सब मेहमानों के प्रति आभार प्रकट किया।

सिस्टर देओदिता भोतेलो, (सुपीरियर PSOL, आगरा)

सेण्ट थॉमस पल्ली में हुआ वेदी सेवकों का आगमन

रविवार 21 सितंबर का दिन सेण्ट थॉमस पल्ली, सिकन्दरा, आगरा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि इस दिन हमारी पल्ली में वेदी सेवक-सेविका संघ का उद्घाटन हुआ जिसका सौभाग्य हमारी पल्ली को कई वर्षों पश्चात् प्राप्त हुआ।

इसमें पल्ली के नौ बालक-बालिकाओं ने वेदी सेवक के रूप में भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत पवित्र मिस्सा के साथ हुई जिसमें वेदी सेवा के सभी बच्चे वेदी सेवक के नए कपड़े पहन कर फादर्स के साथ जुलूस में चैपल के अंदर आए और जुलूस में पवित्र बाइबिल को आदर के साथ वेदी पर रखा गया। तत्पश्चात् दीप प्रज्ज्वलित कर संघ का शुभारम्भ किया गया।

पवित्र मिस्सा फादर जो और फादर अरुण के द्वारा चढ़ाया गया। फादर अरुण ने संत जॉन बर्किमंस जो वेदी सेवकों के संरक्षक संत माने जाते हैं, के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा, कि कैसे जॉन बर्किमंस यूखरिस्त एवं वेदी के प्रति विशेष भक्ति एवं प्रेम के कारण वेदी सेवकों के संरक्षक संत बन गए। पेरिश के सभी बालक-बालिकाओं को संत जॉन बर्किमंस के अनुसार प्रभु के

प्रति प्रेम एवं भक्ति बढ़ाने के लिए आह्वान किया गया।

इस संघ का उद्घाटन फादर अरुण के मार्गदर्शन व नेतृत्व में हुआ। इस पवित्र दिन और वेदी सेवक संघ के उद्घाटन को महत्वपूर्ण एवं सुंदर ढंग से मनाने के लिए हम सभी पल्लीवासी और बालक–बालिकाएं हमारे पल्ली पुरोहितों फादर जो और फादर अरुण को तहे दिल से धन्यवाद देते हैं।

प्रताप तिरकी

Regional Seminar on Social Communications

A two-day workshop on "Pastoral Plan for Social Communications for Agra Ecclesiastical Region" was held in the Agra Archdiocesan Pastoral Centre on 13-14 Sept, 2014. The seminar was meant for the Diocesan Directors of Social Communications (Agra Region) and for the Members of SIGNIS Agra Region as well as for the priests, religious and lay faithful of the Archdiocese of Agra. The seminar-cum workshop was animated by Rev. Dr. George Plathottam, sdb, the Executive Secretary of CBCI Commission for Social Communications.

Most Rev. Albert D'Souza, the Archbishop of Agra, in his inaugural address put in perspective, the purpose of this seminar and the importance of media apostolate in the Church today. He urged the participants to take concerted efforts to implement the suggestions given in the various Church documents on Communication.

Rev. Dr. V Sebastian, the Executive Secretary of Agra Regional Office for Social Communications, expressed his gratitude to the Archbishop and all the members for their presence and hoped that these two days will turn out to be an historical one for the Agra Ecclesiastical Region.

True to his vast experience, Dr. Plathottam dealt in detail with the nuances of the set up of the Office of Communications in the Church in India and how each Region and Diocese should work hand in hand to strengthen this ministry. He said that communication is at the base of every other ministry in the Church therefore, communication specialists must work along with other commissions in each diocese. Explaining about the need of a well defined Pastoral Plan for Social Communications in each diocese, as suggested by the Church Document, "Communio et Progressio" Dr. Plathottam said that this should be done in a time bound manner. He then explained a twenty-point frame work for the planning of the communication ministry in each diocese.

Everyone in the meeting felt highly enriched by the seminar and Rev. Fr. Saji Palamattom, the Director of Communications in the Archdiocesee of Agra proposed the Vote of Thanks to Rev. Dr. George Plathottam on behalf of the Region. The second day was a business day chaired by the Regional Executive Secretary, Rev. Dr. Sebastian. In the meeting, each diocesan director presented a report of the activities in the respective diocese and many matters regarding the Regional Office for Social Communications were discussed.

Fr. Saji Palamattom

Social Communications' Academy inaugurated in Masih Vidyapeeth

September 25th added one more jewel in the crown of St. Xavier's Regional Seminary, Etmadpur. On this auspicious day an Academy of Social Communications was inaugurated in the seminary in the presence of Rev. Fr. A Sebastian, the Rector, Rev. Fr. John De Britto, the Dean, Rev. Fr. Jacob Palamattom, the Director of Social Communications, Agra, the members on the staff and the Brothers of Philosophy section.

The inaugural ceremony started in the seminary basement hall with a prayer song. After the ceremonial lighting of the lamp, Rev. Fr. Samson, the Director of the newly created Academy introduced the Academy and its purpose to the audience. He also introduced the resource person Rev. Fr. Jacob Palamattom and invited him to elaborate upon the subject to the students.

Fr. Jacob, through a Power Point Presentation explained to the Brothers what communication is and how it is an integral part of the mission of the Church citing from the Church documents on Social Communications through the years. He posed many questions to the Brothers for reflection and for future course of action. The ceremony ended with a Vote of Thanks proposed by a Brother.

सेन्ट विन्सेण्ट छात्रावास दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

आगरा 27 सितम्बर। सेन्ट विन्सेण्ट डी पॉल को समर्पित सेंट विन्सेण्ट हाईस्कूल एवं सेंट विन्सेण्ट छात्रावास में **विन्सेण्ट डे** पारंपरिक हर्षोल्लास और भक्ति भावना के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर महाधर्माध्यक्ष डा. आल्बर्ट डिसूज़ा ने कान्वेन्ट के प्रार्थनालय में फीस्ट-डे का पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। छात्रावास की छात्राओं ने प्रवेश भजन पर मनमोहक भक्ति नृत्य कर पूजा समारोह की सुन्दरता में चार चाँद लगा दिए। अपने प्रवचन में स्वामी जी ने सेन्ट विन्सेण्ट के द्वारा गरीबों के लिए सेवा कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने यह भी समझाया, कि हम किस तरह स्वयं निर्धन रहते हुए, दूसरों की सेवा सहायता कर सकते हैं।

इस वर्ष बड़ी सिस्टर मरिया की बीमारी के कारण बच्चों ने किसी भी तरह का सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं किया। प्रीतिभोज के साथ समारोह समाप्त हो गया।

ग्रेसी वेल्स, सेन्ट विन्सेण्ट हाईस्कूल, आगरा

आगरा डिस्ट्रिक्ट कौंसिल ऑफ चर्चेज़ द्वारा पहला रक्तदान शिविर सम्पन्न

आगरा 26 सितम्बर। 'विश्व पर्यावरण एवं स्वास्थ्य दिवस' के अवसर पर मसीही समाज ने रक्तदान कर जीवन बचाने का महान संदेश देते हुए आगरा डिस्ट्रिक्ट कौंसिल ऑफ चर्चेज (ADCC) ने स्थानीय समर्पण ब्लड बैंक (निकट पुष्पांजलि अस्पताल, देहली, आगरा) में एक दिवसीय रक्तदान शिविर आयोजित किया।

शिविर का प्रारंभ कौंसिल के प्रेसीडेण्ट हैवलॉक चर्च के पुरोहित श्रद्धेय धारा सिंह की प्रार्थना के साथ शुरु हुआ। इस अवसर पर विभिन्न गिरजाघरों व संस्थाओं से लगभग 21 युवक-युवतियों ने रक्तदान कर मसीही समाज का नाम रोशन किया। शिविर में उपाध्यक्ष फादर मून लाजरस,

रेव्ह. जिब्राएल दास, सचिव नारमन थॉमस, श्रीमती मीनाक्षी दास, श्रीमती प्रेरणा लायल, किशोर के. लाल, मुकेश जॉन, श्रीमती निशी अगस्टीन आदि उपस्थित थे।

ADCC वैसे तो वर्ष भर में कई कार्यक्रम आयोजित करती है, जिनमें ईस्टर की भोर में 'ईस्टर डॉन सर्विस' एवं क्रिसमस के अवसर पर 'संयुक्त ईसाई क्रिसमस शोभायात्रा' मुख्य है, किन्तु इस वर्ष अगस्त महीने में बाकालॉरिएट सर्विस (मेधावी छात्र/छात्राओं का सम्मान समारोह) भी आयोजित किया, जिसमें छात्रों को प्रशस्ति पत्र एवं बाईबिल की प्रति भेंट स्वरूप प्रदान की गई।

कार्यक्रमों की उसी श्रृंखला में आगरा शहर में पहली बार इस प्रकार रक्तदान शिविर लगाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में दानदाताओं ने भाग लिया। इससे पदाधिकारीगण सहित कौंसिल के सभी सदस्य गद्‌गद् हो रहे हैं। आने वाले वर्षों में कौंसिल गणतन्त्र दिवस एवं स्वतन्त्रता दिवस पर सर्वधर्मीय प्रार्थना सभा का आयोजन करेगी।

श्रीमती निशी अगस्टीन, आगरा

स्वास्थ्य की माता वेलांकनी की प्रतिमा स्थापना की दसवीं वर्षगांठ मनाई गई

आगरा 28 सितम्बर। रोमन कैथलिक समाज ने आरोग्यदायिनी स्वास्थ्य की माता वेलांकनी की प्रतिमा स्थापना की दसवीं वर्षगांठ भक्ति और उल्लास के साथ मनायी। श्रीमती आईलिन नाडर के प्रार्थनालय भवन 195-ए, वैस्ट अर्जुन नगर, आगरा पर विशेष प्रार्थना सभा एवं रोज़री माला विनती की गयी, भजन गायन भी हुआ। इसमें सेंट पैट्रिक चर्च, छावनी के पल्ली पुरोहित फादर जॉन फरेरा, फादर मून लाज़रस, फादर डेनिस डिसूजा, फादर संतीश के अलावा बहुत सी सिस्टर्स एवं विश्वासीजनों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

'माँ का हम सबके जीवन में एक विशेष स्थान होता है। माँ हमें सदाचरण का पालन करने और धर्म का मार्ग अपनाने को प्रेरित करती है। ऐसा ही प्रभु ईसा की माता मदर मेरी (माता मरियम) भी अपने भक्तों के साथ करती हैं। वह हमें सद्‌मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है' सेंट पैट्रिक्स चर्च के पल्ली पुरोहित फादर जॉन फरेरा वैस्ट अर्जुन नगर में श्रीमती आइलिन नाडर के प्रार्थनालय भवन पर आरोग्यदायिनी स्वास्थ्य की माता वेलांकनी (मद्रास) की माता मरियम की पवित्र प्रतिमा के सम्मान में आयोजित प्रार्थना सभा में उपस्थित विश्वासियों को सम्बोधित करते समय कहा।

क्रिश्चियन समाज सेवा सोसाइटी के अध्यक्ष श्री माईकिल सिल्वेरा एवं उनके पुत्र सहायक मीडिया प्रभारी डैनिस सिल्वेरा ने बताया कि श्रीमती आईलिन नाडर के प्रार्थनालय भवन पर वेलांकनी माता की मूर्ति स्थापना की दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर रखी गयी इस विशेष माला विनती समारोह एवं प्रार्थना सभा में नगर के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग तीन सौ लोगों ने भाग लिया। प्रार्थना सभा के दौरान हाथों में जलती मोमबत्तियां लेकर माला विनती जपते हुए भजन गाते हुए भक्तों ने शांति, एकता और भाईचारे की मन्नते मांगी।

श्रीमती मारग्रेट नाडर व श्री ओबरी नाडर ने बताया कि विगत लगभग चार सौ वर्ष पूर्व मद्रास के वेलांकनी गांव में माता मरियम ने दर्शन देते हुए अनेकों लोगों को असाध्य रोगों से मुक्ति दिलायी थी, तभी से तीर्थस्थल के रूप में विकसित इस स्थल को आरोग्यदायिनी स्वास्थ्य की माता वेलांकनी के रूप में जाना जाता है। जो विश्वासी वहां नहीं जा पाते, उनके लिए यहीं पर प्रार्थना सभा एवं शोभायात्रा का आयोजन किया जाता है।

माला के भक्ति-गीतों को श्रद्धालुओं ने अपनी मधुर आवाज से संजोया। विश्वासीजनों ने प्रतिमा दर्शन कर पुण्य लाभ कमाया। संचालन फ्रांसिस जेवियर ने किया। ओबरी नाडर, श्रीमती मारग्रेट नाडर, जूड नाडर, श्रीमती रोविना नाडर व माईकिल सिल्वेरा (मीडिया प्रवक्ता) व डैनिस सिल्वेरा ने आरोग्यदायिनी माता वेलांकनी के पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं।

डेनिस सिल्वेरा, सहायक मीडिया प्रभारी

आगरा डीनरी बाईबल महोत्सव

आगरा डीनरी बाईबल महोत्सव सितम्बर, 2014 को सेन्ट पैट्रिक्स पल्ली में हुआ जिसमें आगरा डीनरी की कुल छः पल्लियों से आए बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की शरुआत मिस्सा बलिदान के साथ हुई जिसमें सभी पल्लियों से आए पुरोहितों ने भाग लिया। तत्पश्चात सेंट पैट्रिक्स चर्च के पल्ली पुरोहित फादर जॉन फरेरा ने फूल देकर सभी पल्ली पुरोहितों का स्वागत किया। इसके बाद विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी हुई जिनमें ग्रुप डांस, सोलो गान, माइम, भाषण प्रतियोगिता और चित्र कला का प्रदर्शन आदि शामिल थे। इन प्रतियोगिताओं का निर्णय करने के लिए सभी पुरोहितों ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। सारी प्रतियोगिताएँ खत्म होने के बाद बच्चों को पुरस्कार दिए गए, जिससे सेंट मेरी पल्ली के बच्चों ने बाजी मारते हुए पहला स्थान हासिल किया और उसके बाद सेन्ट पैट्रिक्स पल्ली दूसरे स्थान पर रहा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे सेन्ट पैट्रिक्स पल्ली के पल्ली पुरोहित फादर जोन फरेरा, सहायक पल्ली पुरोहित फादर संतीष, सेंट क्लेयर्स स्कूल के प्रधानाचार्य फादर डेनिस, कनोसियन सिस्टर्स और सेन्ट पैट्रिक्स पल्ली के युवाओं ने अपना भरपूर सहयोग दिया।

एडवर्ड डेनियल, सेंट पैट्रिक चर्च, आगरा

कब्रिस्तान कमेटी मीटिंग में लिए गए सख्त फैसले

आगरा 28 सितम्बर। आगरा ज्वाइंट सेमेट्री कमेटी, आगरा की रविवार 28 सितम्बर को कोषाध्यक्ष श्री एडवर्ड स्वीट के निवास पर वार्षिक मीटिंग सम्पन्न हुई। सभा का संचालन कार्यवाहक चेयरमेन फादर मून लाजरस ने किया। सभा में सर्वसम्मति से महत्वपूर्ण विषयों पर गंभीरतापूर्वक विचार विमर्श किया गया, जिनमें कुछ मुख्य इस प्रकार हैं–

ऑल साल्स डे (2 नवम्बर) और क्रिसमस डे (25 दिसम्बर) को ध्यान में रखते हुए दोनों कब्रिस्तानों (तोता का ताल और गोरों का कब्रिस्तान) में घास कटाई, चारदीवारी की पुताई, गेट पेंटिंग का काम तुरंत शुरु कर दिया जाए।

कब्रों को पक्का कराना बंद किया जाए। कब्रिस्तान में अब उतनी जगह बची नहीं है और नया प्लॉट खरीदने के लिए कमेटी के पास इतना धन नहीं है। इस सम्बन्ध में सभी गिरजाघरों में एक चिट्ठी भेजी जायेगी। इस नियम की जानकारी देना और नियम का पालन कराना सभी पल्ली पुरोहितों और पास्ट्रेट कमेटी (पैरिश काउंसिल) की जिम्मेदारी है। यदि फिर भी कोई अपने प्रियजनों की कब्रें पक्की कराना चाहे तो पक्की करने की फीस 50,000 रू0 रखी गई है, लेकिन इस पर अंतिम निर्णय अगली मीटिंग में लिया जायेगा।

कच्ची कब्र की फीस 300 रु. से 1000 रु. निर्धारित की गई है। दफन क्रिया के समय रजिस्टर में मृतक का नाम और पता बपतिस्मा रजिस्टर में लिखे नाम और पते के अनुसार ही लिखा जाना चाहिए, अन्यथा बाद में किसी भी तरह का परिवर्तन नहीं किया जायेगा। सभी पल्ली पुरोहितों, चर्च इंचार्जो को निर्देश दिया गया कि वे समय से कब्रिस्तान का चन्दा कमेटी के पास जमा कराएं।

कमेटी की सभा में रेव्ह संतोष पाण्डेय (सेंट पॉल चर्च), रेव्ह धारा सिंह (हैवलॉक चर्च), फादर मून लाजरस (सेंट मेरीज चर्च), श्री एच.के. लाल (सेन्ट्रल मैथोडिस्ट चर्च), श्री अमित बेकन (सेंट जॉन्स चर्च) के अलावा कमेटी के पदाधिकारियों ने भाग लिया। सेंट जार्जेज

कथीड्रल (सदर), बैपटिस्ट चर्च (प्रतापपुरा) एवं सेंट पैट्रिक्स चर्च (छावनी) की ओर से कोई भी प्रतिनिधि सभा में हाजिर नहीं था।

माईकिल सिल्वेरा (ज्वाइण्ट सेक्रेटरी), आगरा

वाई एम सी ए द्वारा निर्धन छात्रों को मुफ्त में अंग्रेजी सिखाने की पाठशाला चालू

आगरा 29 सितम्बर। आर्थिक तंगी अब अंग्रेजी सीखने में बाधा नहीं बनेगी। इसके लिए वाई.एम.सी.ए. (यंग मैन्स क्रिश्चियन एसोसिएश, आगरा) अमीर-गरीब के बीच की खाई को पाटने का प्रयास कर रही है। अमीर घरानों के बच्चों के साथ ही गरीब परिवार के बच्चों को अंग्रेजी भाषा सिखाई जा रही है। इंग्लिश स्पीकिंग और मॉक इण्टरव्यू द्वारा बच्चों को पारंगत किया जा रहा है। यह नि:शुल्क ट्रेनिंग एम.जी. रोड स्थित सेंट्रल मैथोडिस्ट चर्च में हर रोज शाम को 4-5 बजे दी जाती है।

वाई.एम.सी.ए., आगरा शाखा के जनरल सेक्रेटरी श्री अमित कपूर ने **अग्रेडियन्स** को बताया कि कक्षा 12 के विद्यार्थियों से लेकर किसी भी उम्र के प्रशिक्षणार्थियों को पर्सनल्टी डेवलपमेन्ट के अलावा ट्रैफिक नियम, गुस्से पर काबू रखना, गलती होने पर माफी मांगना, कपड़े पहनने का सलीका आदि भी सिखाया जा रहा है। सप्ताहांत में सभी के लिए टेबल मैनर्स का भी सेशन होता है। नवम्बर से कंम्पयूटर ट्रेनिंग तथा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए ताइक्वांडो, कराटे इत्यादि के कोर्स भी शुरु किए जाएंगे।

इस अंग्रेजी स्पीकिंग एण्ड पर्सनैलिटी डेवलपमेन्ट कोर्स की फीस ईसाई युवक-युवतियों के लिए मात्र 100 रु. रखी गई है, जिससे अधिक से अधिक जरूरतमंद लोग इस सुविधा का लाभ पा सकें। आशा है कि आगरा शहर के अधिक से अधिक युवा इसमें भाग लेकर लाभ उठाएंगे। सेंट मेरीज चर्च, आगरा के युवा भी इस सेवा से लाभान्वित हो रहे हैं।

सुनील कुमार, सेंट मेरीज चर्च, आगरा

फादर जो वडाकेकरा गिरकर घायल हुए

आगरा 1 अक्टूबर। महाधर्मप्रांत के वरिष्ठ पुरोहित फादर जो पहली अक्टूबर की भोर में अपने कमरे में गिरकर घायल हो गए। उनके सिर और चेहरे पर गंभीर चोटें आई है। फादर अरुण लसरादो ने उन्हें तुरन्त फातिमा अस्पताल पहुँचाया, जहाँ से घाव गम्भीर और लगातार रक्तस्राव होने के कारण उन्हें पुष्पांजलि अस्पताल रेफर कर दिया गया। उसी दिन देर शाम को फादर जो को दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में भर्ती कर दिया गया। हालांकि समाचार लिखे जाने तक उनकी दशा खतरे से बाहर किन्तु स्थिर बताई जा रही है। अग्रेडियन्स परिवार उनके शीघ्र स्वास्थ्यलाभ की कामना करता है।

Dates to Remember (Oct. - Nov. 2014)

OCTOBER

19	MISSION SUNDAY	
21	B.D.	FR. EUGENE M. LAZARUS
27	D.A.	ABP. CECIL DE SA
28	O.D.	FR. PRAVEEN RAJ MORAS
28	O.D.	FR. JOSEPH PINDIKANAYIL
28	O.D.	FR. TONY D'ALMEIDA
28	O.D.	FR. JOSEPH KUMAR PASALA
28	O.D.	FR. PRAVEEN D'COSTA
28	O.D.	FR. P.RAJ
28	O.D.	FR. PRAKASH RODRIGUES
28	O.D.	FR. SANTEESH ANTONY
29	B.D.	FR. THOMAS K.C.

NOVEMBER

3	O.D.	FR. ALOK TOPPO
3	O.D.	FR. FRANCIS D'SOUZA
3	O.D.	FR. LAWRENCE V RAJA
3	O.D.	FR. VINEESH JOSEPH
9	B.D.	FR. ARUL KUMAR LAZAR
10	B.D.	FR. RAJAN DASS
11	B.D.	FR. FRANCIS D'SOUZA
18	O.D.	FR. RAJAN DASS

State Level Football Tournament held at Greater Noida

St. Joseph's Sec. School, Greater Noida hosted ASISC State Level Football Tournament from 5th Sept to 7th Sept 2014 under the able guidance of the Principal Rev. Fr. Mathew Kumblumoottil. There were fifteen teams in all, 8 teams of seniors and 7 teams of juniors. The participants travelled from Lucknow, Agra, Jhansi, Bareilly, Kanpur North, Kanpur South, Allahabad and Ghaziabad Zone. In both the categories it was Kanpur Zone that lifted the winners' trophy in the finals while Ghaziabad Zone ended up runner up in both the categories.

Mr. Sudhir Joshi and Mr. Vincent K.V. the President and Secretary of ASISC respectively were the luminaries of the concluding ceremony. In their short speech they lifted up the spirits of both the winners and the runners up and gave away Certificate, Medals and Trophies.

The best players from both the winner and runner-up teams will be pooled to form a State team for the National level matches in November, 2014 in Kolkata.

We are delighted to inform you that, St. Joseph's Sec. School has become a vibrant space in the exchange ideas and resources in both curricular and co-curricular activities and programmes. The school has already hosted State Level Basketball Tournament in 2012 and State Level Athletic Meet in 2013, besides this year's recently concluded State Level Football tournament. Kudos to Rev. Fr. Mathew Kumblumoottil (Principal), the teaching and non - teaching faculty and the students for their sense of hospitality and commitment for holistic development. Their collective co - operation and alliances lead to meaningful synergy.

Fr. Alok (Vice Principal)

St. Monica's Day celebrated in G. Noida

St. Monica, the mother of St. Augustine is known for her life of prayer and sacrifice for her son's conversion. Her life has truly inspired many a mother to submit their sons and daughters into the protective arms of Jesus. St. Joseph's Church, Greater Noida celebrated 31st August as her feast and so thought it fit to honour and pray for the women of the parish by observing it as women's day.

In the Holy Eucharist, Rev. Fr. Mathew, the Parish Priest elaborately explained with Scriptural references the importance of a mother in the life of a family and society.

The Mass was followed by Eucharistic Adoration through praise and worship. The women also made use of this opportunity to make their confessions as Rev.Fr. Thomas K.K. was available to hear confessions.

The celebrations of the day ended with a get-

together and interactive session in the school conference hall. All the gathered parishioners were able freely mingle with each other without any inhibitions as the initial reluctance was removed through an active ice-breaking session. The participants were very positive and cooperative to the instructions given by Sr. Zeena BS and her companions who coordinated this lively get together. There were 44 participants sharing the love and joy of Christian Fellowship. The support and encouragement of Rev. Frs. Mathew K, Thomas K.K and Alok are highly appreciable.

Sr. Manjula Deepa, BS, Greater Noida

Onam Celebrated in St. Mary's, Noida

Catholic Women's Association, NOIDA (CWA) celebrated Onam, the State festival of Kerala on 7th September, 2014 at St. Mary's Church, NOIDA. The members of the Association along with their families gathered in the traditional Malayali attire to celebrate the event for the first time in the parish after the formation of the Association three years ago.

Onam is celebrated by Malayalees spread all over the world regardless of their religious affinity. The festival marks the home coming of the legendary King, Mahabali.

The celebration was blessed with the presence of Rev. Frs. Stephen, Joseph, Joson, Shibu, Rev. Sr. Therese and other Sisters of Assisi Convent. A traditional floral decoration called 'Pookalam' was made in front of the Church by the members of Noida Catholic Yuva Sangh (NCYS) led by Ms. Merin Jose. The celebrations began with a welcome speech by the Secretary followed by the lighting of lamp by the Priests, Sr. Therese and some senior members of the parish. The most attractive part of the celebration was the 'Thiruvathirakali', a traditional dance, around the pookalam, by the NCYS girls wearing traditional outfits 'settu saree'. A tombola game was also organised as part of the celebrations which enhanced the joy of all present.

'Onasadya', a seven course meal particular to Onam with more than eleven dishes was served in banana leaves. The delicious and spicy dishes were prepared by the members of the Women's Association giving a personal touch to each item. It was a great day of reliving the nostalgic life back in Kerala. For the non Malayalees it was a time of knowing and enjoying a new tradition and celebration.

Mrs. Juliet Jose
Secretary, CWA, Noida

Aligarh Youth visits
Missionaries of Charity, Aligarh

Following the decision taken at the Youth meeting on 7th Sept., the youth of St. Fidelis' Paish, Aligarh made a visit to the Missionaries of Charity in Aligarh. The youth were accompanied by Rev. Frs. Gregory and Sunil. The Sisters gave the group a warm welcome and guided them to where the mentally challenged brethren stay.

A member of the youth introduced themselves to the inmates. Seeing the guitar in the hands of the youth, the inmates were curious to know what they would do for them. The youth performed a

comedy skit which left them laughing and laughing. The youth also sang film songs and invited them to dance along. It was as though this was the first time that they had an entertainment programme. The session with the mentally challenged brethren ended with a thanksgiving prayer led by Rev. Fr. Gregory.

The youth then moved to the block for the little children. The members of the youth went to each child and tried to spend some time with each of the little and beautiful gifts of God. Most of them were girl children. Pointing to one child, a Sister said, "This child was found abandoned in a heap of garbage". This was a really shocking thing for the youth to hear. The interaction and the story behind each child moved the heart of each member of the youth.

The visit came to an end with refreshments. The Sisters thanked the youth for their visit and for the time they spent with the inmates. The experience will always remain in the hearts and minds of each member of Aligarh youth. It was a joy to watch and experience the joy and divine grace upon the face of each Sister who serves these people in great humility and love.

St. Fidelis' Youth, Aligarh

अलीगढ़ डीनरी का बाईबिल त्यौहार सम्पन्न

हाथरस, 7 सितम्बर। संत फ्रांसिस गिरजाघर, हाथरस में एक दिवसीय डीनरी स्तरीय बाईबिल त्यौहार, अलीगढ़ (क्षेत्र) का समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

इस कार्यक्रम में हाथरस, अलीगढ़, एटा, बस्तर तथा कासगंज के काथलिक बच्चों एवं युवाओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। बच्चों एवं युवाओं के दलों को उनके गिरजाघर के पुरोहित/धर्मबहनों ने अनुप्राणदाता बनकर उत्साहवर्धन किया।

इस कार्यक्रम में श्रद्धेय फादर प्रवीण राज मोरस, फादर संतीष एन्टोनी, फादर राजनदास, फादर फ्रांसिस, फादर जोबी एवं फादर शिबू ने बड़ी तन्मयता के साथ भाग लिया। धर्म बहनों ने भी बढ़चढ़कर हिस्सा लिया।

कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य रूप से एकल नृत्य, एकल गान, सामूहिक गान, भाषण, सामूहिक नृत्य एवं बाईबिल प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। इसके साथ-साथ पेन्सिल स्केच प्रतियोगिता में भी बच्चों एवं युवाओं ने अपनी प्रतिभा दिखायी।

कार्यक्रम का आरम्भ पवित्र मिस्सा से शुरु हुआ एवं सायं की चाय के साथ सम्पन्न हुआ। मध्याहन भोजन का प्रबंध हाथरस पल्ली के द्वारा किया गया। जैसे-जैसे घड़ी की सुईयों ने सायं के चार बजने का संकेत दिया, उक्त कार्यक्रम समापन की ओर बढ़ा।

कार्यक्रम के अंत में विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतियोगियों को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मंच का संचालन दीपक फ्रांसिस ने बखूबी निभाया तथा फादर मैथ्यू तुन्डीयल तथा फादर सान्तियागो को तहेदिल से शुक्रिया अदा किया।

स्नेह भवन सिस्टर्स को कैसे भूला जा सकता है, उन्होंने अपना अमूल्य सहयोग देकर कार्यक्रम की सुन्दरता में चार चाँद लगा दिये।

मोहन सिंह जैतवाल
सेन्ट फ्रांसिस चर्च (स्कूल), हाथरस

ग्रेटर नोएडा में हिन्दी दिवस सम्पन्न

15 सितम्बर 2014 को शहर के सेक्टर अल्फा वन में स्थित संत जोसेफ विद्यालय में बड़ी धूमधाम के साथ हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के विद्यार्थियों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। बच्चों ने हिन्दी के गद्य एवं पद्य साहित्य के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए तथा हिन्दी के महत्व को संज्ञान में लेते हुए अनेक कार्यकम प्रस्तुत किये। इसमें कवि सम्मेलन, नुक्कड़ बहस व नाटक गीत कविता आदि अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। ये कार्यक्रम आज हिन्दी की घटती हुई लोकप्रियता के प्रति चिन्ता तथा हिन्दी के महत्व से ओतप्रोत थे। *सुन्दर सहज मनोहरी है। द्वेष रहित सबसे न्यारी है।। भारत के माथे की बिन्दी। सबकी शान बढ़ाती हिन्दी,* जैसे अनेक प्रेरणादायी गीत प्रस्तुत किये गए। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रद्धेय फादर मैथ्यू कुम्बलूमोट्टिल ने बच्चों के इस प्रयास को सराहते हुए, हिन्दी के महत्व को घर-घर तक पहुँचाने की जरुरत पर बल दिया तथा कहा, कि सरकारी तंत्र को भी हिन्दी के उत्थान के लिए उचित एवं कठोर कदम उठाने चाहिए।

आर्यन मसीह, ग्रेटर नोएडा

धान की फसल को खराब होने से बचाया

गाँव जुनसुटी, मथुरा में 38 बीधा धान की पौध धूप व गर्मी से जलकर नष्ट हो रही थी जिससे किसान काफी परेशान थे। उन्होंने ACDSSS द्वारा संचालित अधिकार परियोजना के कार्यकर्ता कुमरपाल सिंह को फोन द्वारा सूचित किया एवं अपनी समस्या से अवगत कराया। अगले दिन प्रात: ही कुमर पाल गाँव पहुँचे और उनकी समस्यायें सुनी, एवं उनके साथ खेत पर जाकर धान की फसल को देखा तो पता चला की फसल नष्ट होने के कगार पर है। तब वे कुछ पौधे उखाड़ कर खड़ेलवाल कम्पनी मथुरा के मैनेजर श्री अलीखान के पास गये एवं उन्होंने अपनी समस्या बताई। अलीखान जी ने आश्वासन दिया कि हम आपकी फसल का बिल्कुल भी नुकसान नहीं होने देंगें। 19 जुलाई 2014 को अली खान एवं उनकी टीम गाँव जुनसुटी पहुँची और फसल में दवाई का स्प्रे करवाया व किसानों को 10 दिन में फसल को खेत में लगाने की बात कही। इस पर सभी हर्षित हुए एवं समस्त टीम एवं संस्था को धन्यवाद दिया। 38 बीघा में से 17 बीघा धान की पौध बचा ली गई। सम्बन्धित सभी अधिकारियों को कोटि-कोटि धन्यवाद।

जयपुर रीजनल ओलम्पिक में आगरा के बच्चों ने अपना परचम लहराया

राजस्थान की राजधानी जयपुर में 13-18 सितम्बर 2014 तक आयोजित रीजनल स्पेशल ओलम्पिक भारत में सेंट अल्फोन्सा विशिष्ट विद्यालय, आगरा से भी बच्चों ने भाग लिया। 6 दिनों तक चलने वाले इस स्पेशल ओलम्पिक में सेंट अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय, आगरा की कु. संध्या (शिशु भवन मदर तेरेसा होम, आगरा) और कु. निष्ठा जैन ने शिक्षिका श्रीमती रजनी मदान के साथ भाग लिया।

सेंट अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय, आगरा के लिए यह बहुत गौरव की बात रही कि दोनों ही छात्राओं ने वहाँ अभूतपूर्व प्रदर्शन किया। जहाँ कु. संध्या ने 50 मीटर लम्बी दौड़ में पहला स्थान (गोल्ड मैडल) प्राप्त किया, वहीं दूसरी छात्रा कु. निष्ठा जैन ने 50 मीटर लम्बी दौड़ और सॉफ्ट बॉल थ्रो में तीसरा स्थान (ब्रोन्ज़ मैडल) प्राप्त कर संस्थान का नाम रोशन किया। विद्यालय की प्रधानाचार्या सिस्टर अल्फो एफ.सी.सी. के साथ सभी कर्मठ शिक्षक-शिक्षिकाएं व सहायिकाएं उनकी अथक सेवा के लिए बधाई के पात्र हैं।

गुलाबी नगरी में आयोजित इस समारोह में विभिन्न निकटवर्ती राज्यों से बहुत से विद्यार्थियों ने भाग लिया। इससे उनमें खुशी, आत्मविश्वास और आगे बढ़ने का हौसला विकसित हुआ।

रजनी मदान (शिक्षिका)
सेंट अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय, आगरा

राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन

19 और 20 सितम्बर को सी.एम.एस. लखनऊ में राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में पूरे उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड के कई शहरों से प्रतिभागी आए। सेन्ट पैट्रिक्स स्कूल, आगरा से 11वीं कक्षा की छात्रा अलीशा जॉन (पुत्री श्री शेखर स्वामी और श्रीमती प्रवीन) ने भी इस प्रतियोगिता में भाग लिया। हम सभी के लिए यह बहुत खुशी की बात है कि अलीशा जॉन इस प्रतियोगिता में तीसरे स्थान पर रही और उन्हें कांस्य पदक से नवाजा गया।

केवल यही नहीं अलीशा ने सेंट पैट्रिक्स स्कूल से आई सी एस ई बोर्ड 10वीं की परीक्षा 92.6% से पास की है। उनके माता-पिता तथा उनके करीबी लोगों को अलीशा पर गर्व है। हम इन दोनों उपलब्धियों के लिए अलीशा को बधाई देते हैं।

डेरिक स्टीफन

Direct flights between Goa and Sri Lanka?

Panaji: The Goa government is considering introduction of direct flights to and from Sri Lanka to facilitate travel for pilgrims from the island nation to the Exposition of Spanish saint Francis Xavier, a 40-day decennial event beginning Nov 22.

A Catholic Church official from Goa, also said that direct flights between Sri Lanka and Goa

would help tap an increasing synergy between believers in St. Francis Xavier and recently cannonised Sri Lankan St. Joseph Vaz, who was of Goan origin.

"We are considering (the proposal). A request has come, which in-principle I have accepted. I cannot guarantee because it is not in my hands. We are trying to work out flights from Sri Lanka," Goa Chief Minister Manohar Parrikar told reporters, adding that a request would be made to the central government for this.

"Pope Benedict is Grandfather of all grandfathers", "Abandonment of the elderly is hidden euthanasia: Pope Francis"

28/09/2014 Vatican: Retired pontiff Benedict XVI joined some 50,000 pilgrims in Saint Peter's Square on Sunday, for a meeting between Pope Francis and elderly people from around the world. Welcoming his predecessor, the Holy Father described Pope Benedict as the "grandfather of all grandfathers."

"I have said many times that it gives me great pleasure that he lives here in the Vatican, because it is like having a wise grandfather at home. Thank you!" Addressing the crowds, the Pope recalled the series of testimonies which had been given over the course of the morning, taking special note of those from the people of Erbil, Iraq, who had escaped violent persecution. "To all of these together we express a special 'thank you!'! It is very good that you have come here today: it is a gift for the Church."Like violence against children, the Pope said, "violence against the elderly is inhuman."

"But God does not abandon you, and He is with you! With his help you are and continue to be the memory for your people; and also for us, the great family of the Church."

"Old age, in particular, is a time of grace, in which the Lord renews us in his call: he calls us to protect and transmit the faith, he calls us to pray, especially to intercede; he calls us to be close to those in need."

To grandparents in particular, the Pope entrusted a "great task: to transmit life experience, the history of a family, of a community, of a people; to share wisdom with simplicity, and the same faith: the most precious legacy!" It is a blessing, when a family keeps its grandparents close.

Pope Francis warned against the reality of the abandonment of the elderly, describing it as a "hidden euthanasia," the effect of a "culture which discards" human beings: children, unemployed youth, and elderly persons are discarded on the pretense of maintaining a system of economic "balance". The center of this culture is no longer "the human person," but "money."

"We are all called to counter this poisonous culture of waste," the Pope said.

All Christians and "men of good will" are called to create a society that, in contrast, is "more welcoming, more human, more inclusive," one which "does not need to discard" those who are physically or mentally weak, those who are old: "a society which measures its success" according to according to the care given to these persons.

A people which does not care for its

grandparents, Pope Francis said, jeopardizes its future by doing away with its memory, as well as its roots. He warned: "You have the responsibility of keeping these roots alive in yourselves" through prayer, the Gospel, and works of mercy. In this way, we are like "living trees," which will continue to bear fruit even in old age.

Buddhist in Sri Lanka makes symphony to mark Pope's visit

In an effort for religious reconciliation, the Sri Lankan government has commissioned a symphony from a Buddhist composer to commemorate Pope Francis' voyage to the nation which will take place in January.

Cardinal Malcolm Ranjith of Colombo presided over a Sept. 17 performance of the Soul of Christ Symphony, composed and directed by the nation's renowed composer Vajira Indika Karunasena, who is a Buddhist. "The visit of the Holy Father is a landmark occasion for Sri Lanka," Cardinal Ranjith said. "We warmly welcome Pope Francis to our country, which is rich in religious and cultural values."

"We must use this occasion to demonstrate to the world our values." The symphony was commissioned by the Sri Lanka Broadcasting Corporation, the nation's public radio network. The idea for the symphony was that of the SLBC's chairman, Hudson Samarasinghe.

The symphony has also been released as a CD in Sri Lanka in preparation for Pope Francis' Jan. 13-14 visit, which will be the third time a Roman Pontiff has made an apostolic voyage to the "Pearl of the Indian Ocean."

The Cardinal thanked the SLBC, as well as Samarasinghe and Karunasena for helping to make the Pope's visit a fruitful one. Rambukkana Siddharatha Thero, a respected Buddhist monk in Sri Lanka, also complimented the SLBC and Samarasinghe on their efforts for religious reconciliation. He will arrive in Colombo the mornnig of Jan. 13, visiting the Nunciature and the archbishop's residence to meet with the Sri Lankan bishops, and then will visit President Mahinda Rajapaksa and religious leaders.

The Cardinal also noted that a commorative stamp will be issued that day. The following day, Pope Francis will canonized Bl. Joseph Vaz, a 17th century Oratorian known as the "Apostle of Ceylon."

Russian expansion endangers Catholics in Ukrain

The Apostolic Nuncio to Ukraine has urged efforts to support Catholics in the nation, warning that Russia's expansion into the country has caused major instability and threatens a return to political persecution.

"The danger of repression of the Greek-Catholic Church exists in whatever part of Ukraine Russia might establish its predominance or continue through acts of terrorism to push forward with its aggression. Any number of statements emanating from the Kremlin of late leave little doubt of Russian Orthodox hostility and intolerance toward Ukrainian Greek-Catholics."" Archbishop Thomas Gullickson said on Sept. 23.

Satan seduces by disguising evil as good: Pope Francis

29/09/2014 Vatican: On Monday's feast of the archangels Pope Francis spoke of the ongoing battle between the devil and mankind, encouraging attendees to pray to the angels, who have been charged to defend us.

"He presents things as if they were good, but his intention is destruction. And the angels defend us," the Roman Pontiff told those gathered for his Sept. 29 Mass in the Vatican's Saint Martha residence.

The Bishop of Rome began by pointing to the day's readings taken from Daniel Chapter 7 in which the prophet has a vision of God the Father on a throne of fire giving Jesus dominion over the world, and Revelation Chapter 12 which recounts the battle in which Satan, as a large dragon, is cast out of heaven by St. Michael.

Noting how these are strong images portraying "the great dragon, the ancient serpent" who "seduces all of inhabited earth," the Pope also drew attention to Jesus' words to the prophet Nathaniel in the day's Gospel from John when he tells him "You will see heaven opened and the angels of God ascending and descending upon the Son of man." All of these readings, he said, speak of "the struggle between God and the devil" which "takes place after Satan tries to destroy the woman who is about to give birth to a son."

"Satan always tries to destroy man: the man that Daniel saw there, in glory, and whom Jesus told Nathaniel would come in glory," the pontiff observed, explaining that "From the beginning the Bible speaks to us of this: Satan's (use of) seduction to destroy." "This struggle is a daily reality in Christian life, in our hearts, in our lives, in our families, in our people, in our churches," the Pope went on, adding that "if we do not struggle, we will be defeated."

सिस्टर ऐनिड (आरजेएम) 91 वर्ष की हुईं

आगरा 30 सितम्बर। जीज़स एण्ड मेरी धर्मसमाज की सिस्टर ऐनिड ने 30 सितम्बर को अपना 91वाँ जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर प्रात: 6 बजे कॉन्वेण्ट चैपल में फादर जोसफ डाबरे ने उनके लिए धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। मिस्सा के बाद सभी ने उन्हें बधाई दी। अग्रेडियन्स की ओर से हार्दिक बधाई!

ज़रा सोच कर तो देखो!

दूर तक फैले दरख्तों के बीच, जरा चल कर तो देखो
हरी मुलायम घास पर, ज़रा बैठकर तो देखो
फूलों से लदी डालियों पर,
ज़रा तितलियों का नर्तन तो देखो
कोयल और पपीहे की स्वर से उमड़ता संगीत
ज़रा सुनकर तो देखो वर्षा की रिमझिम फुहार में
ज़रा भीग कर तो देखो सर्दी की गुनगुनी धूप में
ज़रा लेट कर तो देखो गर्मी की चिलचिलाती धूप में
पेड़ों की सघन छाया में ज़रा बैठकर तो देखो
हे! कंकरीट के जंगल में रहने वाले मानव
तुमने कितना कुछ खो दिया ज़रा सोचकर तो देखो।

सिन्धु थॉमस (अध्यापिका)
अर्सलाइन कान्वेण्ट स्कूल, ग्रेटर नोएडा

Students of St. Alphonsa Institute
at Special Olympics, Jaipur

First Death Anniversary of Rev. Fr. Jose Muttath

Inauguration of Communication Academy
at Masih Vidyapeeth, Etmadpur

St. Vincent's Hostel Girls at the Inauguration of
Regional Communication Seminar

Inauguration of Alter Servers' Association,
St. Thomas Parish, Sikandra, Agra

Women's Day Celebrations, Greater Noida

8th Death Anniversary
Most Rev. Cecil de Sa,

Born 22nd Nov. 1922

Died 27th Oct. 2006

Editorial Team : ★ Fr. E. Moon Lazarus ★ Fr. Shaji Antheenattu ★ Sr. Claudine RJM ★ Dr. Antony A.P. ★ Mrs. Nishi Augustine

Manager, Principal, Staff & Students

JESUS & MARY CONVENT SCHOOL

GREATER NOIDA

For Private Circulation Only

Printed at:
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-282 004
Ph. : 0562-2854123
E-mail : stjosephpress040@gmail.com

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com